

(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 53, अंक 1, जुलाई, 2017
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

परमपिता शिव परमात्मा
गीता-ज्ञान-दाता

आत्मा और परमात्मा की अनुभूति

गुणों एवं विशेषताओं का प्रादुर्भाव

सकारात्मक जीवन शैली

आंतरिक शांति की राह

तन एवं मन का स्वास्थ्य
संबंधों में मधुरता

व्यवहारिक जीवन में नैतिकता

एकतामयता एवं मनोबल में वृद्धि

सामाजिक उत्तरदायित्व संस्थापना

आस्थात्मक संश्लेषण

सामाजिक उत्तरदायित्व

संस्थापना

राजयोग से प्राप्तियाँ



1. कडी- नवनिर्मित सेवाकेन्द्र भवन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, गुजरात के उप-मुख्यमंत्री नितिन भाई पटेल, ब्र.कु सरला दीदी, ब्र.कु सरला बहन, ब्र.कु.मोहन सिंघल भाई तथा अन्य। 2. काठमाण्डू (नेपाल)- नेपाल के नवनिर्वाचित प्रधानमन्त्री भाता शेरबहादुर देउबा को सफल कार्यकाल की बधाई एवं शुभकामना देने के बाद ब्र.कु.राज बहन तथा अन्य ब्र.कु.भाई-बहनें ईश्वरीय स्मृति में। 3. लखनऊ (गोमती नगर)- उ.प्र. के उप-मुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा तथा अन्य को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.राधा बहन उनके साथ। 4. कटक- 'स्त्रिच्युअल पाथ वे फॉर गुड गर्बनस एण्ड सोशल सेक्यूरिटी' विषयक वर्कशॉप का उद्घाटन करते हुए उड़ीसा के महिला तथा बाल विकास मंत्री भाता प्रफुल कुमार सामल, आई.ए.एस.बहन मानसी लिभाल, ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.नीलम बहन तथा ब्र.कु.पार्वती बहन। 5. कतुआ- केन्द्रीय उत्तर-पूर्वी क्षेत्रीय विकास राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ.जितेन्द्र सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.वीना बहन। 6. भद्रक- 'मेरा उडिसा, नशा मुक्त उडिसा' रैली को हरी झण्डी देते हुए महिला तथा बाल विकास मंत्री भाता प्रफुल्ल कुमार सामल, भाता नितिन चन्द्र, प्रमुख सचिव, विकलांग व्यक्तियों के सामाजिक सुरक्षा एवं सशक्तिकरण विभाग, भाता ज्ञानरंजन दास, जिलाधीश, आई.ए.एस., ब्र.कु.मंजू बहन, ब्र.कु.लीना बहन तथा अन्य। 7. भंगरोट्ट (मण्डी)- जिला स्तरीय मेले में चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए आबकारी एवं कराधान मंत्री भाता प्रकाश चौधरी, ब्र.कु.प्रेमलता बहन तथा ब्र.कु.वीना बहन। 8. हरिपुराधार (नाहन)- केन्द्रीय जनजातीय मंत्री भाता जुएल ओराम को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रमा बहन तथा ब्र.कु.दीपशिखा बहन।

शुभाशीष



आदि देव प्रजापिता ब्रह्मा के मुखकमल से निरन्तर प्रवाहमान ईश्वरीय वाणी को जन-जन तक पहुँचाकर भारत को देवस्थान बनाने की ओर अग्रसर ज्ञानामृत पत्रिका जनसेवा के सफल 52 वर्ष पूरे कर, 53वें वर्ष में प्रवेश कर रही है, यह हर्ष का विषय है।

पिछले 100 वर्षों में समाज में अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ है। बढ़ता नैतिक पतन, फैलता भोगवाद, प्रदूषण, नई-नई बीमारियाँ, पारिवारिक बिखराव, भूखमरी, साम्प्रदायिक दंगे, दिखावा, असुरक्षा, अपराध आदि को देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आध्यात्मिक और नैतिक विचारों का फैलाव समाज के कोने-कोने में, हर घर में, हर व्यक्ति तक हो और इसी श्रेष्ठ कार्य को ज्ञानामृत पत्रिका निरन्तर अन्जाम दे रही है।

इसमें छपे लेख हमारी बौद्धिक क्षमता, गुणवत्ता को विकसित करते हैं जिससे हम हर परिस्थिति का अवलोकन और मूल्यांकन कर समाधान पा लेते हैं। इसके निरन्तर अध्ययन से मनोस्थिति एकरस बन जाती है और निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ तथा विघ्नों और तूफानों में भी निर्विघ्न और अचल रह पाती है। दैवीगणों का निरन्तर विकास करते हुए यह स्वार्थों से ऊपर उठना और भलाई के पथ पर मजबूती से चलना सिखाती है।

समाज के हर वर्ग और व्यवसाय के लोगों को वैचारिक उन्नयन देने वाली इस पत्रिका को सभी राजयोगी भाई-बहनें गाँव, शहर, गली, मोहल्ले तक पहुँचाने की सेवा अथक होकर करते रहते हैं और आगे भी करते रहेंगे, ऐसी मेरी शुभकामना है। जो भाई-बहनें लेखों के रूप में नवीन विचारों की गुलाबाशी करते हैं, जो इसके रूप को सजाते-निखारते हैं, जो इसे लोगों तक पहुँचाकर लोकप्रिय बनाते हैं, जो इसे पढ़कर अपना और दूसरों का सशक्तिकरण करते हैं, उन सबको मैं कोटि-कोटि बधाई देती हूँ।

वर्ष 2017-18 के लिए दिव्यबुद्धिवान पाठकों के प्रति यही शुभ सन्देश है कि परमात्मा रूपी शमा पर पतंगे की तरह विचार-चक्र लगाते हुए परमात्म-प्रेम के प्रकम्पन सारे विश्व में फैला दें। प्रभु समर्पित बुद्धि बन निरन्तर उड़ती कला का अनुभव करें। बापदादा और हम सब की यह प्यारी पत्रिका दिनोदिन उन्नति को पाती हुई ज्ञान प्रकाश से विश्व को निरन्तर आलोकित करती रहे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ
बी. के. जानकी

अमृत-भूषी

- ◆ सफलता की कुँजी दृढ़ता (संपादकीय)4
- ◆ बाबा की प्यार भरी याद6
- ◆ आत्मालोचना से7
- ◆ दुखहर्ता ने हर लिया8
- ◆ 'पत्र' सम्पादक के नाम9
- ◆ परेशान करने वाले10
- ◆ सृष्टि रंगमंच है11
- ◆ प्रेम की अभिव्यक्ति13
- ◆ दुर्घटना हुई पर सेवा14
- ◆ बाबा बने अधिवक्ता15
- ◆ सम्मान – मांगते वक्त16
- ◆ मेरा आकाश, मेरा क्षितिज19
- ◆ खत्म हुआ दौरों का दौर20
- ◆ उमंग-उत्साह सम्पन्न जीवन21
- ◆ हम और (अ) हम22
- ◆ बाबा ने की जीवन और23
- ◆ रास्ता सही है,24
- ◆ जीवनदान का मिला वरदान ...25
- ◆ जीवन परिवर्तन की26
- ◆ निंदा करना भी रोमिंग28
- ◆ त्याग व सेवा की मूरत29
- ◆ सचित्र सेवा समाचार32
- ◆ मानसिक तनाव से मिली34

सदस्यता शुल्क

| | भारत | विदेश |
|---------|----------|----------|
| वार्षिक | 100 /- | 1,000/- |
| आजीवन | 2,000 /- | 10,000/- |

शुल्क 'ज्ञानामृत' के नाम से ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- 'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन-307510 (आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription

Bank Name : State Bank of India
A/c Holder Name : Gyanamrit
A/c No. : 30297656367
Branch Name: PBKIVV, Shantivan
IFSC Code : SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :

Mobile : 09414006904, 09414423949
Email : hindigyanamrit@gmail.com
Website: gyanamrit.bkinfo.in

सफलता की कुँजी दृढ़ता

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती से एक बार पूछा गया कि मानव को देव समान बनाने में सरलता, सहनशीलता, नम्रता, पवित्रता, एकाग्रता, धैर्य, दृढ़ता आदि सभी गुणों की अति अनिवार्य भूमिका है, फिर भी इनमें से किसी एक को सब गुणों का राजा या सिरमौर कहा जाए तो वह कौन-सा है? मातेश्वरी जी का उत्तर था, दृढ़ता। उन्होंने कहा, दृढ़ता का गुण आने पर ही हम अन्य गुणों की धारणा कर पाते हैं।

दृढ़ता चाहिए 100 प्रतिशत

पुराने जमाने में वाष्प से ईजन चलते थे। आजकल भी चलते हैं कहीं-कहीं। पानी से वाष्प बनाने के लिए उसे 100 डिग्री तक उबाला जाता है। इससे कम गर्मी हो तो वाष्प बनेगी नहीं और कार्य होगा नहीं। कोई पानी को 90 डिग्री तक उबाले और कहे, जी वाष्प तो बनी नहीं, क्या करूँ? करे क्या? तापमान को बढ़ाए। इसी प्रकार किसी भी कार्य की सफलता के लिए संकल्प में 100 प्रतिशत दृढ़ता होगी तो कार्य होगा। कार्य नहीं हो रहा है तो समझ लीजिए, दृढ़ता में कमी है। कार्य को करने के लिये दृढ़ता 100 प्रतिशत चाहिए अर्थात् उसके प्रति एकाग्रता, उस पर आंतरिक झुकाव, उसके प्रति लगन 100 प्रतिशत चाहिए। उसके सिवाय कुछ ना दिखे, तब वह कार्य होगा। जितनी मानसिक ऊर्जा लगाएँगे उतनी सफलता मिलेगी। सफलता के लिए चाहिए फौलादी विचार। विचार फौलाद की तरह अकाट्य हों, तब सफलता होगी।

गिनने से नहीं, धारण करने से मंत्र अपने बनते हैं

इतिहास बताता है कि महात्मा बुद्ध का एक शिष्य बहुत बड़ी-बड़ी बातें किया करता था। लोगों को कहता था कि मैं दो बजे उठता हूँ, कई मालायें फेरता हूँ, कई सौ मंत्र

जपता हूँ, मुझे बहुत मंत्र याद हैं आदि-आदि। एक बार महात्मा बुद्ध के समक्ष यह बात पहुँची। उनको बहुत दया आई। दया इसलिए आई कि जो व्यक्ति केवल कहता है और करता नहीं, वो कभी मंजिल पर नहीं पहुँचेगा। वह सदा स्वयं को धोखे में रखेगा। इस धोखे से छुड़ाने के लिए महात्मा बुद्ध ने एक यात्रा पर जाने हेतु उसे अपने साथ लिया। रास्ते में बहुत सारी गौएँ जा रही थी। उस ज़माने में पशुधन बहुत बड़ा धन माना जाता था। जिस व्यक्ति के पास जितना ज्यादा पशुधन, वो उतना ही ज्यादा अमीर होता था। किसी व्यक्ति के पास 500 या 1000 या इससे अधिक गौएँ भी होती थीं। महात्मा बुद्ध ने उन जाती हुई गौओं की ओर इशारा करके अपने शिष्य को कहा, कितनी गौएँ हैं, ज़रा गिनती तो करो। गिनती करने में वह होशियार था, तुरन्त बोला, 480 गौएँ हैं। बुद्ध ने कहा, क्या गिनती करने मात्र से ये गौएँ तुम्हारी हो जायेंगी? शिष्य ने कहा, नहीं भंते, गौओं को अपना बनाने के लिए इनके लिये चारे का, पानी का, छाया का, सेवकों का, धनराशि का प्रबन्ध करना पड़ेगा। तब बुद्ध ने कहा, तुम जो रोज़ कहते हो कि मैंने इतनी मालायें फेरीं, इतने मंत्र जपे, इतना जल्दी उठा, तो क्या कहने मात्र से मंत्र तुम्हारे हो गये, क्या गिनने मात्र से मालायें तुम्हारी हो गईं? क्या कहने मात्र से तुम साधना के स्वरूप हो गये? जैसे गौओं को अपना बनाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है, मात्र गिनने से गौएँ अपनी नहीं बन जाती, ऐसे ही साधना के मंत्र गिनने से अपने नहीं बनते, उन्हें मेहनत करके जीवन में धारण करना पड़ता है। शिष्य को बात समझ में आ गई।

किसी एक संकल्प को दोहराते

रहने से वह उतरेगा कर्म में

हम केवल सोचें, दूसरों को केवल सुनायें, इससे कोई

भी कर्म साकार नहीं हो जाता। मकान बनाने के लिए नींव में पत्थर बहुत अधिक कूटे जाते हैं। बार-बार हथौड़ी मारनी पड़ती है। पत्थर जितने बारीक बनते हैं, उतनी नींव मजबूत बनती है। इसी प्रकार बार-बार संकल्प रूपी हथौड़ी अन्दर मारनी पड़ती है तब कर्म साकार में आता है। यदि हम किसी बोर्ड पर एक बार लाइन खींचते हैं तो वह हल्की-सी दिखेगी लेकिन उसे पेन्ट या पैन्सिल से गहरा करते जाएँ, पैन्सिल फिराते जाएँ, पेन्ट फिराते जाएँ, तो बहुत गहरी हो जाती है, दूर से दिखाई देती है। इसी प्रकार, जब हम कोई संकल्प एक बार करते हैं और फिर उसे छोड़ देते हैं तो उसकी शक्ति भी कम रहती है लेकिन जब उसी संकल्प को मन में दोहराते रहते हैं, मुझे करना ही है, मुझे यह करना ही है, रात और दिन हमको वही बात दिखती रहती है कि यह करके ही छोड़नी है, जब तक यह होगी नहीं, मुझे चैन नहीं, मुझे करनी ही है, करनी ही है, इसको कहते हैं दृढ़ता। मान लीजिए, हमने एक बात सोची, फिर दूसरी की तरफ मन चला गया, फिर तीसरी की तरफ मन ललचा उठा कि यह भी करनी है, इसका अर्थ है कि अच्छी तो हमें सारी बातें लगती हैं लेकिन परिणाम यह निकलेगा कि हम कर एक भी नहीं पाएँगे क्योंकि हम स्थिर नहीं हैं, किसी एक पर एकाग्र नहीं हैं

‘करना तो है’ के बजाए ‘करना ही है’

दृढ़ता की शक्ति से सम्पन्न व्यक्ति का संकल्प होता है ‘करना ही है।’ इसकी भेंट में दूसरा संकल्प होता है, ‘करना तो है।’ ‘करना ही है’ यह भाव जहाँ होगा वहाँ सब कुछ सहने की, त्यागने की, छोड़ने की भावना होगी। कई बार हम देखते हैं कि यदि बच्चे का एडमिशन अमुक स्कूल में कराना ही है, तो चाहे कितनी भी फीस देनी पड़े, किसी की भी सिफारिश लगवानी पड़े, बच्चे को कितना भी दूर भेजना पड़े, हम कर लेते हैं। यदि अमुक तीर्थ-यात्रा करनी ही है तो कितनी भी दूरी हो, कितनी भी गरमी हो, शरीर ठीक हो या न हो, हम कर लेते हैं लेकिन जहाँ ‘करना तो

है’ यह ‘तो’ शब्द आ गया तो इसका अर्थ है, मैं मना थोड़े ही कर रहा हूँ करने से? ऐसा थोड़े ही है कि मैं करूँगा नहीं। मैंने कब कहा कि मैं नहीं करूँगा? करना तो है ही ना। ‘तो’ आने से न कोई समय सीमा है, न कोई लगन है, बस कर लेंगे, कभी भी हो जायेगा। शिव बाबा ने यह भी कहा है, जब किसी भी बात में आगे गे-गे-गे लगता है तो ऐसा लगता है जैसे छोटे बच्चे गूंगे होते हैं, गे-गे करते हैं। तो कब तक छोटे बच्चे बने रहेंगे? ‘करेंगे’ की बजाए ‘करना ही है’ यह संकल्प सफलता की ओर ले जाएगा।

संकल्प का बोझ

मान लीजिए, हम केवल संकल्प करते हैं और उसे साकार नहीं करते, तो संकल्प का भी बोझ होता है और वह बोझ सिर के अन्दर रखा रहता है, याद आता रहता है। लौकिक दुनिया के आधुनिक विद्यार्थी अपनी मन की स्थिति बताते हैं कि हम एक ही सवाल से घिरे रहते हैं। हम पढ़ना चाहते हैं, गृहकार्य करना चाहते हैं, परीक्षा की तैयारी भी करना चाहते हैं और सोचते रहते हैं कि यह पाठ पढ़ना है, वो सवाल हल करना है, यह प्रयोग करके देखना है लेकिन हम करते नहीं हैं, पढ़ते नहीं हैं। इससे क्या होता है? सारी किताबें मस्तक पर रखी रहती हैं और हम बोझ में ही उठते हैं, बोझ में ही खाते हैं, बोझ में ही सारे काम करते हैं। अगर सोचा हुआ कर लें तो बोझ उतर जाये और आनंद की अनुभूति हो लेकिन हम कभी भी आनंद में नहीं रहते। हम पिकनिक करते हैं, दोस्तों के साथ घूमते हैं, टी.वी. भी देखते हैं, हँसी-मजाक भी करते हैं लेकिन भीतर से कभी भी आनंदित नहीं हैं। सपने में भी बोझ, जागृत अवस्था में भी वही बोझ। यह बोझ किसका है? केवल और केवल सोचने का। हम इस बोझ को लिये-लिये घूमते रहते हैं लेकिन अगर हम कार्य कर लें तो बोझ उतर जाये परन्तु हम बात को पकड़े-पकड़े, अमूल्य समय बिता देते हैं। जिस दिन उस पकड़ी हुई बात को छोड़ देते हैं बड़ा आनंद आता है, हल्के हो जाते हैं। फरिश्ते की तरह उड़ने लगते हैं। तो हम

बात को पकड़ कर न रखें, उसको क्रियान्वित कर लें, तब फरिश्ते बनेंगे। हमारे ऊपर और कोई बोझ नहीं लेकिन अपनी ही सोच का बोझ होता है।

ब्रह्मा बाबा के जीवन में दृढ़ता

दृढ़ता का अर्थ क्या है? अपूर्ण विचारों के बोझ से मुक्ति। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के जीवन में दृढ़ता बहुत अधिक थी। जब बाबा ने अलौकिक जीवन की शुरुआत की तो रास्ते में बाधा रूपी बड़ी-बड़ी चट्टानें आईं, अवरोध आये। बहुत लोगों ने बाबा को कहा कि आपका ज्ञान बहुत अच्छा है, बातें बड़ी अच्छी हैं पर बाबा आप अपने नियमों में ज़रा-सी ढील दे दो। जैसे कहते हैं ना कि यह दूध बड़ा निखालस है, हजम नहीं होता, इसमें ज़रा-सा पानी मिला दो तो बाबा को भी कहा कि थोड़ी-सी मिलावट कर दो। थोड़े-थोड़े नियम ढीले कर दो, हम आपके मददगार बन जायेंगे, जनता आपका विरोध करना छोड़ देगी लेकिन बाबा अटल रहे। चाहे पवित्रता की धारणा थी, खान-पान की धारणा थी, बाबा नहीं हिले। लोगों ने मारने की धमकी दी, घर जलाया, बहुत कुछ किया। कमाल की बात तो यह है कि जिन्होंने ऐसा कुछ किया, उनके लिये बाबा के मन में कोई दुर्भावना भी नहीं रही। कहते हैं कि किसी को माफ कर देना बड़ी बात है लेकिन उसको भूल जाना उससे भी बड़ी बात है। नहीं तो चित्त में यह भाव रहता है कि देखो, इसको मैंने माफ कर दिया, मैं कितना महान हूँ। इसने गलती की थी परन्तु मैंने माफ कर दिया। बाबा ने तो यह बात भी याद नहीं रखी कि मैंने इसको माफ किया या इसने कुछ गलत किया था। अपने असूलों पर बाबा जितने दृढ़ थे, अपने चित्त की स्वच्छता में भी बाबा उतने ही अटल थे। ❖

ब्र.कु.आत्मप्रकाश

बाबा की प्यार भरी याद का कमाल

ब्रह्माकुमार डॉ.कर्णसिंह राठी, रोहतक (हरियाणा)

घटना जून, 2015 की है। मैंने पी.एस.ए.टेस्ट करवाया तो पता चला, सामान्य से ज्यादा है। इसके लिए कुछ इलाज भी करवाया परन्तु फिर भी पी.एस.ए. नम्बर, 2015 में 84 तक पहुँच गया। सामान्य पी.एस.ए.0-4 होता है। डॉक्टर की सलाह पर बायप्सी करवाई। प्रोस्टेट का कैंसर निकला। बाबा का साथ होने के कारण मुझे चिन्ता नहीं हुई और विश्वास बना रहा कि मैं ठीक हो जाऊँगा।

अंग्रेजी दवा ली, रिएक्शन हुआ तो छोड़ दी। फिर मैं दिन भर में प्यारे बाबा की योग की किरणें कई बार शरीर पर डालता और अनुभव करता कि बीमारी खत्म हो रही है। निरन्तर याद से बाबा की टचिंग होती रहती कि यह चीज ले लो, ऐसा कर लो, मैं वैसा ही करता रहता। उपवास एवं प्राकृतिक खान-पान ज्यादा करने लगा जिसमें अपक्व ही ज्यादा से ज्यादा होता था।

मुझे महसूस हुआ कि तेजी से आराम आ रहा है इसलिए 11 जनवरी, 2016 को पुनः पी.एस.ए. टेस्ट करवाया, जो एक चमत्कार था। पी.एस.ए. 84 से घटकर 04 (चार) आ गया, कैंसर लगभग खत्म हो गया। उसके बाद जब भी मैंने पी.एस.ए.टेस्ट करवाया, एक से भी कम आया है। पन्द्रह सितम्बर, 2016 को यह 0.21 आया और 18 मार्च, 2017 को 0.27 आया।

मेरी आयु 81 वर्ष है और यह बीमारी पूणरूप से प्यारे बाबा के साथ और हाथ से समाप्त हो गई है, मैं अब सामान्य जीवन जी रहा हूँ।

बाबा सुप्रीम सर्जन हैं। जैसे आत्मा चेतन है, बाबा परमचेतन हैं। उनकी शक्ति परम है, परम शक्ति का लाभ योग (याद) द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। प्यार भरी शक्तिशाली याद से असंभव को भी संभव किया जा सकता है। प्यारे बाबा का कोटि-कोटि धन्यवाद। ❖

आत्मालोचना से आत्म-परिवर्तन

ब्रह्माकुमारी किरण, बोरीवली (मुम्बई)

हम प्रायः दूसरों की आलोचना करते, उनकी गलतियाँ बताते हुए तथा विभिन्न प्रकार की टीका-टिप्पणी करते हुए थकते नहीं हैं। कुछ व्यक्ति तो आलोचना द्वारा दूसरों के प्रति अपनी ईर्ष्या प्रकट करते हैं। उनकी बुराई देख-देखकर अपने अंदर नफरत पाल लेते हैं। पर शायद उन्हें यह ज्ञान नहीं है कि यह एक प्रकार का मानसिक रोग है और इसी मानसिक रोग की वजह से शारीरिक रोग भी पैदा होने लग जाते हैं। फिर हम इस पंच तत्व के पुतले को ठीक करने के लिए क्या भी औषधि करें परंतु फर्क तो तभी पड़ेगा जब हम अपनी मानसिकता का परिवर्तन करेंगे।

जिस किसान के खेत में अनावश्यक कीट उत्पन्न हो जाते हैं उसकी खेती चौपट हो जाती है, उसी प्रकार, जो व्यक्ति अपने दोषों, कमजोरियों, दृष्टवृत्तियों का उन्मूलन और नाश नहीं करता उसका जीवन चौपट हो जाता है।

हमारा घर जल रहा हो तो क्या हम उस आग को बुझाने के बजाय दूसरे के जलते घर को देख खुश होते रहेंगे? हमें स्वयं ही अपनी निर्बलता रूपी अग्नि दूर करनी होगी। जहाँ स्वयं में कमजोरियाँ भरी हैं, वहाँ दूसरे की त्रुटियों को देखकर अपने आप को बड़ा या महान समझना बुद्धिमत्ता नहीं है। जो व्यक्ति अन्तर्मुखी बन अपनी सच्ची आलोचना करता है और अपनी कमी-कमजोरियों को, अपनी बुराइयों को दूर करने का निरन्तर प्रयास करता है वही महानता के मार्ग पर आगे बढ़ता है।

अपनी निर्बलताओं के प्रति जागरूक होना आधी विजय प्राप्त करना है। बुरे विचार, दूसरों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष तथा प्रतिशोध के भाव, जीवन में अंधकार ही लाएँगे और जिसका वर्तमान अंधकारमय हो उसका भविष्य कैसे उज्ज्वल हो सकता है? दूसरों की आलोचना से हम धीरे-धीरे चिन्ता, व्यग्रता, अधैर्य, उद्वेग, निराशा, चंचलता,

असंतोष, चिड़चिड़ापन इत्यादि मानसिक विकारों में फँसते जाते हैं।

कौन ऐसा व्यक्ति है जो हर दृष्टि से परिपूर्ण है? किसमें पूर्ण परिपक्वता है? यदि हम गंभीरता और सच्चाई से देखें तो पता चलेगा कि बुराइयाँ देखने की सबसे बड़ी बुराई तो मेरे अंदर है। हमारे पास करने को कार्य तो बहुत हैं परंतु हम उन सब महत्वपूर्ण कार्यों को छोड़कर व्यर्थ का कार्य करने लग जाते हैं। संसार के सभी कार्यों से ऊँच और श्रेष्ठ (पवित्र) कार्य है 'आत्मनिर्माण'। आत्मनिर्माण की पहली सीढ़ी है आत्मनिरीक्षण।

अपने दोषों को निष्पक्ष नेत्रों से तथा सावधानी से बहुत कम देखते हैं। हमारे अंदर 'अहम्' की भावना इतनी तीव्र है कि हम अपने बड़प्पन में ही डूबे रहते हैं। जो आत्मपरिवर्तन की इच्छा रखते हैं उन्हें अपने दोष भी साफ दिखाई देते हैं। अतः निष्पक्षता से आत्मालोचना करने से ही यथार्थ उन्नति हो सकती है।

दादी जानकी जी सदैव कहती हैं कि अगर मैंने किसी की एक बुराई देखी तो वो मेरी 10 देखेगा इसीलिए न मैं किसी की बुराई देखूँ, न कोई मेरी देखे। ❖

आवश्यक सूचना

सरोजलाल जी मल्होत्रा ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल आफ नर्सिंग (शिवमणि होम के नजदीक, तलहटी, आबू रोड) के लिए एक ब्र.कु.होस्टल वार्डन (पुरुष, 30-45 वर्ष की आयु) की जरूरत है। योग्यता – मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से ग्रेजुएट, कॉलेज में वार्डन के रूप में कम से कम 3 वर्ष का अनुभव।

मोबाइल नं. 8432403244/9414143717,
Email - nntagrawal@gmail.com

दुखहर्ता ने हर लिया दर्द



ब्रह्माकुमार इन्द्रपाल मौर्य, जबलपुर (नेपियर टाउन)



मैं पिछले तीन वर्षों से ईश्वरीय ज्ञान में हूँ। एक सप्ताह के ईश्वरीय ज्ञान के कोर्स के बाद मेरे जीवन में काफी बदलाव आया। हर परिस्थिति में सकारात्मक सोच का आगमन हुआ। सबके प्रति शुभ भावना रखना, स्वयं से संतुष्ट रहना तथा हमेशा खुश रहना मैंने जीवन में धारण कर लिया।

दर्द से हुआ परेशान

मई, 2016 में मेरे दोनों कंधों एवं हाथों में दर्द होने लगा। धीरे-धीरे दर्द इतना बढ़ गया कि हाथ उठाना मुश्किल हो गया। यहाँ तक कि कपड़े पहनना, नहाना आदि भी नहीं कर पा रहा था। डॉक्टर के पास गया, उन्होंने रक्त परीक्षण एवं ई.सी.जी. कराने की सलाह दी। वो करवाये, दवा भी ली पर कोई फायदा नहीं हुआ। इसके बाद एम.आर.आई. कराने के लिए मेडिकल कॉलेज गया। हड्डी के डॉक्टर को दिखाया। अर्थोपेडिक्स के पास गया, कंधों का एक्सरे करवाया, दवा खाई। उन्होंने सलाह दी, आप एक सप्ताह फीजियोथेरेपी करवाइये, आपका कंधा चिपक रहा है। इन सबमें मुझे 5 दिन लग गये। मैं दर्द से इतना परेशान हो गया था कि इन पाँचों दिन सेवाकेन्द्र नहीं जा पाया।

मुरली से मिला समाधान

छठे दिन आश्रम गया तो निमित्त बहन के पूछने पर सब बताया। वे बोली, आप सेवाकेन्द्र अवश्य आओ। उसी दिन की मुरली में बाबा ने मेरी समस्या का समाधान बता दिया। बाबा ने कहा, 'मीठे बच्चे, अगर बाप को भूले तो सुख गुम हो जायेगा। बाप की याद में रहने से अतीन्द्रिय सुख भासता

है।' मुरली सुनकर घर आया। घर में टेबल पर 'ज्ञानामृत' पत्रिका रखी थी, उठा कर पढ़ने लगा। एक भाई ब्रह्माकुमार योगेश्वर कुमार ने राजयोग के प्रयोग से अपनी सोरायसिस की बीमारी तथा शारीरिक दर्द के ठीक होने के बारे में लिखा था। पढ़कर मेरी जिज्ञासा बढ़ी।

योग के प्रयोग से दर्द हुआ दूर

रात्रि में सोने गया, फिर 11 बजे उठकर बिस्तर पर ही बैठ गया। पवित्र मन से एकाग्र हो गया और ज्योतिर्बिन्दु आत्मा बन परम ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा से मिलन मनाने लगा। मन में संकल्प आने लगे, मैं एक आत्मा हूँ, परमपिता परमात्मा मेरे पिता हैं। मैं अवश्य अपने दुखों से मुक्त हो सकता हूँ। फिर संकल्प आने लगा कि अब बाबा की शक्तियों की सुनहरी किरणें मुझ आत्मा में समा रही हैं और भृकुटि से हाथ तथा पैरों तक शक्ति का संचार होने लगा है। फिर बाबा की किरणों को केन्द्रित किया कंधों और हाथों पर जहाँ दर्द हो रहा था। बार-बार मन में यही संकल्प दोहराया कि अब बाबा की अदृश्य शक्तियों से मेरे हाथ और कंधों का दर्द समाप्त हो रहा है। इस प्रकार विचार करते हुए मैं लेट गया और कब नींद आ गई, पता ही नहीं चला। प्रातःकाल बाबा को याद कर उठ गया। शरीर में हल्कापन महसूस हो रहा था। स्नान करने के लिए वस्त्र उतारते वक्त बड़े आराम से हाथ चलने लगे जो कि पिछले 10 दिनों से नहीं चल पा रहे थे।

मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। शरीर बिल्कुल हल्का हो गया था। धीरे-धीरे दो दिनों में मैं बिल्कुल सामान्य हो गया। हाथ और कंधों का दर्द कहाँ छूमंतर हो गया, कुछ पता नहीं चला। तब से हर कार्य समय पर करते हुए अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। प्रतिदिन मुरली क्लास सुनता हूँ। बाबा के राजयोग के प्रयोग ने अचम्भा कर दिया। वाह बाबा वाह!





‘पत्र’ संपादक के नाम

मार्च अंक में “दान, महादान और वरदान” लेख में यह सीख दी गई है कि परमात्मा की प्राप्ति सिर्फ संन्यास लेने से नहीं बल्कि गृहस्थ में रहकर हर कर्तव्य करते हुए भी हो सकती है। समाज के ऊपर निर्भर न रहते हुए, समाज की हर संभव सेवा करते हुए योगी बना जा सकता है।

ब्रह्माकुमार हरिशंकर जोशी, बोरिवली पूर्व, मुम्बई



ज्ञानामृत पत्रिका अर्थात् ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ‘शिव’ के द्वारा प्रदत्त ज्ञान की गुह्य परिभाषा को सहज व सरल तरीके से हर मानव आत्मा तक पहुँचाने वाली एक अनोखी आध्यात्मिक पत्रिका जिससे हर पाठक आत्मा का मन रूपी ‘सुमन’ दिव्य गुणों से खिल उठता है। अप्रैल माह की पत्रिका में सम्पादकीय लेख ‘धर्म और धन’, दादी जी द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर, ‘माँसाहार या शवाहार’ तथा ‘ईर्ष्या - मन के लिए धीमा जहर’ विशेष सराहनीय लेख हैं।

ब्र.कु.जयकिशोर, ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज, आबू रोड



ज्ञानामृत मूर्च्छित को सुरजीत करने वाली संजीवनी बूटी है, गोदरेज के ताले समान बंद बुद्धि के कपाट खोलने वाली चाबी है। इसमें छपने वाले अनुभव हमें जीने की सच्ची राह दिखाते हैं। संजय की कलम से स्तम्भ ने परमात्मप्यार का अनुभव कराया है। एक बार पत्रिका पढ़ने बैठते हैं तो पूरा पढ़ कर ही उठते हैं और फिर अगली पत्रिका की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। सम्पादकीय लेख एवं ब्रह्माकुमारी उर्मिला बहन के लेख भी बहुत प्रेरणादायी रहे हैं।

**ब्रह्माकुमार हरिपाल सिंह, वरिष्ठ ट्रेन चालक, दिल्ली
मेट्रो, दिल्ली**



सौभाग्यवश मुझे विकासनगर (देहरादून) में आयोजित एक प्रदर्शनी में ज्ञानामृत मासिक पत्रिका का अक्टूबर, 2015 अंक पढ़ने का अवसर मिला। प्रेरणादाई सम्पादकीय “जीवन स्तर और विचारों का स्तर”, जो वर्तमान वास्तविकता की झलक को स्पष्ट प्रदर्शित करता है, अति उत्तम लगा। समाज और युवा पीढ़ी को आज ऐसी जागृति की प्रबल जरूरत है।

**एस.एस.मजीठिया, विकासनगर, देहरादून
(उत्तराखंड)**



अप्रैल अंक में प्रकाशित ‘माँसाहार या शवाहार’ कारगर लेख दिल की गहराई तक उतरकर मन को झकझोर देने वाला है। आध्यात्मिक पथ के राही इसे पढ़ माँसाहार से बिल्कुल दूर हो जायेंगे। दूसरे जो लोग मन में माँस भक्षण को फायदेमंद समझते हैं, उनमें भी घृणाभाव अवश्य ही पैदा होगा। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि माँसाहारी बनना मौत के वारंट पर हस्ताक्षर करना है। ‘नर सशक्तिकरण’ का नया शीर्षक एक सार्थक लेख है व नर जाति पर सटीक प्रहार करने वाला है। ज्ञानामृत को पीना ही अजर-अमर हो जाना है। न कोई अमृत ऐसा, ज्ञानामृत के जैसा।

धनेश्वर प्रसाद, सेन्ट्रल जेल, रायपुर



मेरे अति प्रिय ब्र.कु.आत्मप्रकाश जी एवं ‘ज्ञानामृत’ के लेखन, प्रकाशन, फोटो सेशन प्रभाग से जुड़े सभी को हार्दिक साधुवाद। आपने ज्ञानामृत को चर्मोत्कर्ष तक पहुँचाया है। इसके ज्ञानप्रकाश से दिव्य आत्मायें स्वयं को प्रकाशमान और आनंदित अनुभव करती हैं और आगामी अंक का बेसब्री से इंतजार करती हैं। यह आप सबकी विद्वता, अध्ययन, समर्पण और उस अलौकिक परिसर की आबोहवा का असर है। मैं आपको बारंबार दिल की गहराइयों से धन्यवाद प्रेषित करता हूँ।

**प्रमेन्द्र देशवाल, प्रधान सम्पादक ‘आर्यपुत्र’, रुड़की,
उत्तराखंड**

परेशान करने वाले भूत (काल) को भूल चुकी हूँ

पल्लवी अग्रवाल, गाजियाबाद (उ.प्र.)

ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले मेरा मन हमेशा उदास रहता था। भूतकाल की बातों को सोच-सोच कर इस कदर परेशान थी कि मैंने वर्तमान में जीना ही बन्द कर दिया था। नकारात्मक बातें सोचना और लोगों की नकारात्मकता पर नज़र जाना, आदत-सी बन चुकी थी। दो सालों तक इस स्थिति में रहने के कारण घबराहट, बेचैनी, क्रोध, सिरदर्द, चिड़चिड़ापन, उदासी आदि मेरे व्यवहार में आ गए थे। घर में सुख-सम्पन्नता के बावजूद मैं खुद को अकेली, तनावग्रस्त व परेशान महसूस करती थी। मेरे युगल का व्यवहार बहुत अच्छा है। वे हमेशा मुझसे कहते कि खुश रहा करो लेकिन चाहकर भी मैं खुश नहीं रह पाती थी।

ईश्वर की प्राप्ति होती है

एक दिन मैं अपनी सोसाइटी में नीचे टहल रही थी। कई महिलाएँ भी शाम को टहलने आती थीं। उनमें से एक को मैंने कहा, “बहन, मैं अन्दर से बहुत परेशान हूँ, ऊपर से तो सब ठीक है लेकिन बहुत अधिक तनाव रहता है, क्या करूँ?” बहन ने कहा, “मेरे साथ कल ब्रह्माकुमारी आश्रम चलना।” मैंने पूछा, “ये क्या होता है?” उन्होंने कहा, “यहाँ बहुत अधिक शान्ति, खुशी, प्यार, उमंग, उत्साह व ईश्वर की प्राप्ति होती है।” मैं चलने को राज़ी हो गई।

स्थिति पूरी तरह बदल गई

अगले दिन उनके साथ सेवाकेन्द्र पर गई तो देखा कि यहाँ तो कोई सजावट नहीं है। ब्रह्मा बाबा की एक बड़ी-सी फोटो, साधारण से परदे और दरी-गद्दों पर ज़मीन में बैठने की व्यवस्था है। खैर, प्रथम दिन ब्रह्माकुमारी बहन ने प्रथम पाठ पढ़ाया, कुछ भी समझ में नहीं आया। मैंने मन में सोचा, ये कहाँ आ गई हूँ, कल से नहीं आऊँगी लेकिन उन बहन ने मुझे कहा था कि एक सप्ताह का कोर्स छोड़ना मत ज़रूर पूरा करना। औपचारिकता-वश मैंने कोर्स पूरा कर लिया

और सेवाकेन्द्र पर नियमित जाती रही। नियमित जाते रहने का यह परिणाम निकला कि मेरी स्थिति पूरी तरह से बदल गई। घबराहट, तनाव, बेचैनी छूमन्तर हो गए। सिरदर्द अब कभी नहीं होता। देर रात तक नींद न आने की समस्या भी समाप्त हो गई। क्रोध बहुत कम हो गया। भूतकाल की जिन बातों से मैं सदा परेशान रहती थी वे अब मुझे याद भी नहीं आतीं। अब नकारात्मक बातें भी बन्द हो गईं। किसी व्यक्ति के कुछ गलत बोलने का अब कोई असर नहीं पड़ता। मैंने प्रतिदिन मुरली सुनकर अपनी स्थिति बहुत शक्तिशाली बना ली है। किसी भी बात पर मन अब नहीं रोता है। हमेशा खुद को कोई-न-कोई स्वमान में रखती हूँ, इससे स्थिति बहुत ही श्रेष्ठ बन जाती है।

सबसे पहले मैं उस बहन का शुक्रिया करूँगी जिसने मुझे प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का रास्ता दिखाया। फिर मैं निमित्त बहन का शुक्रिया अदा करूँगी जिन्होंने ज्ञान का कोर्स कराकर परमपिता परमात्मा से मेरा मिलन कराया। अन्त में प्यारे बाबा का शुक्रिया करती हूँ जो हमेशा और हर पल मेरे सहायक हैं। सचमुच बाबा जादूगर हैं। उन्होंने मेरा बहुत साथ दिया है। बहुत-बहुत धन्यवाद परमपिता, परमशिक्षक व परमसद्गुरु। ❖

तुरन्त आवश्यकता है

एस.एल.एम.ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज (शिवमणि होम के नजदीक, तलहटी, आबू रोड) के लिए बीस.एस.सी.(नर्सिंग) ग्रेजुएट-2 तथा एम.एस.सी.(नर्सिंग)-2, कम्युनिटी नर्सिंग तथा ओ.बी.जी.में विशेषज्ञतायुक्त पुरुष या स्त्री, कम से कम 1 साल का अनुभव अनिवार्य है।

मोबाइल नं. 9875197194,

Email - slmgnc.raj@gmail.com

सृष्टि रंगमंच है

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

सुप्रसिद्ध अंग्रेजी नाटककार शेक्सपीयर ने कहा है, सृष्टि एक नाटक है (The world is a stage)। परमपिता परमात्मा शिव भी कहते हैं, सृष्टि एक नाटक है और हरेक मानवात्मा अपना-अपना निर्धारित रोल प्ले करती है। लगता ऐसा है कि मानवात्मा का रोल जन्म से शुरू होकर, मृत्यु तक पूरा हो जाता है परन्तु वास्तविकता यह है कि यह रोल जन्म से पहले से प्रारम्भ होकर मृत्यु के बाद तक भी चलता है इसलिए कहा गया है, मानव का धरती पर जीवन उस किताब के समान है जिसका पहला और आखिरी पन्ना गायब है। पहले पन्ने का अर्थ है जन्म से पहले आत्मा कहाँ थी और आखिरी पन्ने का अर्थ है मृत्यु के बाद आत्मा कहाँ जाएगी?

अनादि साथी

सृष्टि रंगमंच पर अपना पार्ट शुरू करने से पहले हरेक आत्मा अपने घर परमधाम में, अपने पिता परमात्मा के सान्निध्य में होती है। सतयुग में जब पहले-पहले आत्मा सृष्टि पर आती है तो उसके साथ केवल तीन सूक्ष्म शक्तियाँ होती हैं मन, बुद्धि, संस्कार। ये तीनों शक्तियाँ आत्मा की अनादि साथी हैं जो कभी भी उससे विलग नहीं होतीं। सृष्टि पर आने के बाद अन्य-अन्य साथी मिलते जाते हैं और उसके मेरे-पन का विस्तार होता जाता है।

पहला पड़ाव अर्थात् पहला जन्म

इस बात को हम एक उदाहरण के रूप में इस प्रकार समझ सकते हैं कि मानो कोई राजा लम्बी यात्रा के लिए अपने महल से निकला तो उसके साथ मन्त्री (मन), राजगुरु (बुद्धि) और सेना सहित सेनापति (संस्कार) तीनों चले। कुछ दूर जाने के बाद पहला पड़ाव डाला गया। राजा के तीनों सहयोगी कुछ स्थानीय लोगों को बुला लाए जो भोजन, पानी, शयन, सम्पर्क आदि कार्यों में मदद कर

सकें। यहाँ पहले पड़ाव का अर्थ है आत्मा का पहला जन्म और स्थानीय लोगों का अर्थ है प्रकृति प्रदत्त शरीर और कर्मेन्द्रियाँ जो आत्मा के धरती पर वास करने के लिए आवश्यक साधन जुटाते हैं और प्रकृति तथा व्यक्ति से सम्पर्क बनाते हैं।

नए पड़ाव में नए नौकर

कुछ समय के बाद राजा जब पड़ाव बदलता है, नई जगह पड़ाव डालता है तो उसे स्थानीय नौकर वहीं छोड़ देने पड़ते हैं और नए स्थान पर, नए नौकर उसकी सेवा में हाजिर हो जाते हैं। यहाँ पड़ाव बदलने का अर्थ है एक शरीर द्वारा निर्धारित पार्ट पूरा करने के बाद उसे छोड़कर नया शरीर धारण करना। इस नए जन्म में नया शरीर और नई इन्द्रियाँ पुनः उसकी सेवा में हाजिर हो जाती हैं। इस प्रकार एक कल्प में आत्मा रूपी राजा 84 पड़ाव बदलता है और हर पड़ाव में शरीर रूपी नया नौकर प्राप्त करता है अर्थात् शरीर और इन्द्रियाँ हर जन्म में बदल जाते हैं।

मन का प्रयोग कम से कम करें

यहाँ सबसे महत्वपूर्ण चिन्तनीय विषय यह है कि शरीर और इन्द्रियाँ तो हर जन्म में बदलते हैं परन्तु जो अनादि साथी – मन, बुद्धि, संस्कार हैं, वे कभी नहीं बदले जा सकते इसलिए ज्यादा महत्वशाली होते हैं। आत्मा को इनकी तरफ सबसे ज्यादा ध्यान देना चाहिए ताकि ये सशक्त और वफादार रहें। लेकिन आज हम देख रहे हैं कि हरेक व्यक्ति का ध्यान शरीर और इन्द्रियों की बाहरी सजावट की ओर ज्यादा है। वे भूल जाते हैं कि ये इन्द्रियाँ तो आत्मा के नौकरों के भी नौकर अर्थात् चाकर हैं। चाकरों पर इतना, समय, शक्ति, धन लगाने के बजाए हम मन, बुद्धि, संस्कारों की चेकिंग में समय लगाएँ। बहुत अच्छा हो यदि हम मन का प्रयोग कम से कम करें और इस संसार में

कार्य-व्यवहार निभाते हुए बुद्धि का अधिकाधिक प्रयोग करके साक्षी और न्यारे-प्यारे रहें। जितना सूक्ष्म शक्तियों पर ध्यान देंगे उतने अच्छे पार्टधारी बनेंगे।

आगे बढ़ने के क्रम में बदल जाती है पहचान

सृष्टि रंगमंच पर चलने वाले नाटक का प्रथम दृश्य है सतयुग जिसमें 16 कला सम्पूर्ण देवी और देवताओं का वास है। दूसरा दृश्य है त्रेतायुग जिसमें 14 कला देवी और देवताओं का वास है। तीसरे-चौथे दृश्य – द्वापरयुग और कलियुग में क्रमशः 8 कला और फिर लगभग जीरो कला वाले मनुष्यों का वास है। प्रश्न उठता है कि 16 कला सम्पन्न देवी और देवता, सतयुग में अपना पार्ट बजाकर कहाँ छिप जाते हैं और बाकी युगों वाले पार्टधारी भी कहाँ चले जाते हैं। वास्तव में कोई भी पार्टधारी एक बार रंगमंच पर आ जाने के बाद, नाटक की समाप्ति से पहले कहीं जा ही नहीं सकता परन्तु बदलते पार्ट अनुसार शरीर बदल लेने के कारण हम उसे पहचान नहीं पाते। हम प्रतिदिन पेड़ों को उगते हुए देखते हैं। मान लीजिए, किसी भी एक पेड़ का बीज अंकुरित हुआ, पतली, कोमल, हरी डाली जमीन से ऊपर आई और उस पर दो पत्ते भी दिखे। इसे हम एक वर्ष बाद देखें तो पाएँगे कि पतली, कोमल, हरी डाली थोड़ी मोटी, कालिमायुक्त और सख्त हो गई है और पत्ते भी दो के बजाए कई हो गए हैं। अब सवाल उठता है कि पहले वाली पतली, कोमल, हरी डाली कहाँ गई? गई कहीं नहीं, बढ़ने के साथ-साथ रूप को बदलती गई और बढ़ोतरी की प्रक्रिया में नए-नए पत्ते भी जुड़ते गए। इसी प्रकार सतयुग के 16 कला सम्पन्न देवी-देवता ही, आगे बढ़ते नाटक के साथ-साथ रूप, गुण बदलते गए, 16 कला से 14 कला हो गए, 14 कला से 8 कला, फिर लगभग जीरो कला हो गए और वृद्धि के क्रम में पार्टधारियों की संख्या भी बढ़ती गई। कलियुग के अन्त तक वृद्धि का यह क्रम जारी रहता है। इसके बाद पाँचवाँ गुप्त युग – संगमयुग प्रारम्भ होता है जिसमें भगवान धरती पर अवतरित होकर सभी

पार्टधारियों को एक बार घर ले जाते हैं और फिर नाटक की हूबहू पुनरावृत्ति होती है।

पार्ट प्ले करते हुए खो जाती है मूल पहचान

किसी भी नाटक के कुछ अपने नियम होते हैं जैसे कि कोई भी पार्टधारी जब पार्ट प्ले करने की तैयारी करता है तो उसका पहनावा और चेहरा इतना बदल दिया जाता है कि खुद उसके घर के लोग भी उसे पहचान नहीं पाते। इसी प्रकार हम सब भी इस बेहद के नाटक में जब पार्ट प्ले करने आते हैं तो हमारा मूल स्वरूप (आत्मा का स्वरूप) इतना बदल दिया जाता है कि हम आपस में एक-दूसरे को बिल्कुल नहीं पहचान पाते कि हम भाई-भाई हैं, हम एक पिता के बच्चे हैं, एक ही घर से आए हैं आदि-आदि। इस मूल पहचान के बिना, रंगमंच पर अल्पकाल के लिए बनने वाले माता-पुत्र, पिता-पुत्र, पति-पत्नी आदि-आदि रिश्तों में भी पूर्ण निस्वार्थ और त्याग की भावना नहीं रह पाती। यही कारण है कि वर्तमान समय रंगमंच पर बने रिश्तों में उलझनें बढ़ रही हैं और जिस क्षण हमें हमारे परमधाम वाले अनादि रिश्ते की स्मृति आती है, सारी उलझनें सुलझ जाती हैं।

मालिकी है केवल अभिनय के लिए

एक पार्टधारी को रंगमंच पर पार्ट के अनुसार सुख, सुविधा, धन, दौलत, मान, नौकर, चाकर, खजाना बहुत कुछ मिलता है परन्तु पार्टधारी का यह कर्तव्य है कि वह इन सब चीजों का उपभोग करते भी, अंदर से अनासक्त रहे और यह याद रखे कि पार्ट पूरा होते ही मुझे घर जाना है। लेकिन कई बार ऐसा भी होता है, रंगमंच पर राजा का पार्ट प्ले करने वाले व्यक्ति का अपने मुकुट, राजाई पोशाक, सिंहासन आदि से लगाव हो जाता है और अभिनय की अवधि पूरी होने के बाद वह इन्हें रंगमंच से उठाकर साथ ले जाने की कोशिश करता है। जब निदेशक को इसकी भनक लगती है तो वह इस पार्टधारी के प्रति चौकन्ना हो जाता है और अभिनय के अगले क्रम में उसे ऐसी भूमिका देता है जिसमें साधन, सुविधाएँ हों ही नहीं और फलस्वरूप

वह रंगमंच की चीजें उठाने का संकल्प करे ही नहीं। यही बात इस बेहद के नाटक के पार्टधारी हम मनुष्यों पर भी लागू होती है। हम इस रंगमंच पर कितना भी धन, माल, पैसा, ज़ेवर, जमीन आदि के मालिक बन जाएँ, यह मालिकी केवल अभिनय के लिए है और इस रंगमंच तक सीमित है। अभिनय पूरा होने पर, रंगमंच छोड़ देने पर हम केवल एक आत्मा रह जाते हैं और रंगमंच की चीजें, रंगमंच पर ही रह जाती हैं। फिर अन्य पार्टधारी अपने-अपने पार्ट के अनुसार उन चीजों का उपभोग करने का पार्ट प्ले करते हैं। हम अन्यत्र जाकर पार्ट प्ले करने लगते हैं। इस प्रकार केवल पार्टधारी बदलते हैं, रंगमंच तथा उसका सामान वहीं बना रहता है।

यदि कोई पार्टधारी, रंगमंच छोड़ देने का समय आने पर भी साधन, धन, पदार्थ आदि को मन से छोड़ नहीं पाता है तो सृष्टि-ड्रामा की अदृश्य नीति के अनुसार उसे अगले पार्ट में इनके अभाव का सामना करना पड़ता है। कहने का भाव यही है कि इस विशाल सृष्टि रंगमंच पर हम अनासक्ति के साथ भूमिका निभाएँ ताकि अन्त समय परमात्मा पिता की याद आए, न कि व्यक्तियों और पदार्थों की। तभी अन्त श्रेष्ठ मति से श्रेष्ठ गति होगी। ❖

प्रेम की अभिव्यक्ति

ब्रह्माकुमारी गायत्री, सोडाला, जयपुर (राजस्थान)

प्रेम आत्मा का एक गुण है। यह एक ऐसी शक्ति है जिससे पत्थर को भी गलाया जा सकता है और अनेक सूखे दिलों में उमंग जगाया जा सकता है। प्रेम का अहसास बहुत सुखदायी होता है। यह निःस्वार्थ भावना सच्चे दिल से जुड़ी होती है। अपने लिए कुछ भी उम्मीद नहीं, केवल दातापन की भावना, जिसका मन ऐसा निःस्वार्थ हो, वो ही प्रेम को समझ सकता है।

प्रेम अर्थात् उदारता, केवल देने की भावना। जिस प्रकार नदी, पेड़, वायु और प्रकृति के सभी तत्व सर्व के प्रति समभाव रखते हैं, इनका ध्येय हमेशा केवल देना होता है, केवल परोपकार की भावना होती है, यह प्यार की ही अभिव्यक्ति है। जो मनुष्यात्मा प्रेम के गुण से भरपूर होगी उसमें उदारता का गुण अवश्य होगा।

प्रेम अर्थात् सर्व मनुष्यात्माओं के प्रति दया। अपकारी पर भी उपकार और कल्याण की भावना। किसी के प्रति भी अहित न सोचना, शुभभावना और शुभकामना रखना। प्रेम अर्थात् सहयोग। निर्बल आत्माओं को गुणों का, शक्तियों का, ज्ञान का सहयोग देना। गिरे हुए को उठाना ही प्रेम है।

किसी का ध्यान रखना, यह भी प्रेम की अभिव्यक्ति है। किसी को हिम्मत देना, जरूरतों को बिना कहे समझना, किसी की कमजोरी को समाकर गुणवान बनाना, किसी की आँखों को पढ़कर समझ जाना कि उसे क्या चाहिए, यही तो प्रेम है।

हम चाहते हैं कि कोई हमसे प्रेम करे परन्तु प्रेम कभी मांगा नहीं जाता है। प्रेम और सम्मान मांगने से नहीं मिलते हैं। ये अपने आप मन में उठने वाले उद्गार हैं। तो फिर ये उद्गार किसी के मन में हमारे प्रति कैसे उठेंगे? जैसा बीज वैसा फल। दूसरे शब्दों में, जो हम देंगे, वो बदले में मिलेगा। कहने का अभिप्राय है, अगर हम मन से शुभभावना, मधुर वाणी और सुखदायी कर्म द्वारा विश्व में प्रेम के प्रकम्पन फैलाएँगे तो बदले में वो ही ऊर्जा हमारे पास लौटकर आएगी। इसके लिए पहल हमको करनी होगी।

जिस प्रकार धनी ही निर्धन आत्माओं की मदद कर सकता है, उसी प्रकार हम भी प्रेम के प्रकम्पन तभी फैला पाएँगे जब हमारा अन्तःकरण प्रेम के खजाने से भरपूर होगा। वो खजाना हम ईश्वर से प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वो प्रेम का सागर है। जब हम उसके बच्चे बनकर, उससे बुद्धि का योग जोड़ते हैं तो वो हमारे मन को प्रेम के खजाने से भरपूर कर देता है। ❖

दुर्घटना हुई पर सेवा नहीं रुकी

ब्रह्माकुमार हेमंत परीख, अहमदाबाद



मैं पिछले 43 सालों से ब्रह्माकुमारीज में राजयोग का अभ्यास कर रहा हूँ। बाबा को सर्वसंबंधों से साथी बनाकर कुमार जीवन सफल कर रहा हूँ। सरकारी प्राध्यापक के रूप में 24 साल सेवा देने के बाद हाल ही में

सेवानिवृत्ति के बाद ईश्वरीय सेवा द्वारा पुण्य का खाता जमा कर रहा हूँ।

सच्चे दिल से बाबा को साथी बनाकर कार्य करते हैं तो बाबा बच्चों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। बाबा की यह मदद 2 नवम्बर, 2016 को देखने को मिली। उस दिन सुबह 9 बजे, तीन जिज्ञासुओं को ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स सिखाने के बाद मैं स्कूटर द्वारा सेवाकेन्द्र से घर जा रहा था। आधा रास्ता पार किया था कि बाबा ने 20 मिनट के लिए मुझे अपनी गोद में ले लिया। आँखें खुलीं तो अपने को वी.एस.हॉस्पिटल के सिटी स्कैन विभाग में पाया। कपड़े खून से लथपथ थे। सिर पर घाव पड़ा हुआ था और हाथ के पंजे पर चीरा पड़ा था। मेरे साथ एक मित्र भी थे। मैंने पूछा, आप यहाँ मेरे साथ कहाँ से आये? उसने कहा, आपके साथ बड़ी दुर्घटना घट गई है, मुझे फोन से जानकारी मिली तो मैं तुरंत पहुँच गया। आप बेहोश थे, सिटी स्कैन कराने के लिए आपको यहाँ लाए हैं। सिटी स्कैन रिपोर्ट ठीक आई। मैंने बाबा (परमात्मा) का दिल से आभार माना।

बाबा ने निमित्त बहन के माध्यम से मुझे सूचना दिलाई कि हॉस्पिटल में दाखिल न होकर, सिटी स्कैन की रिपोर्ट लेकर सेवाकेन्द्र पर आ जाओ। हम सेवाकेन्द्र पर जा पहुँचे। वहाँ वरिष्ठ निमित्त बहन ने मुझे सांत्वना दी और एक डॉक्टर के क्लिनिक पर जाने की व्यवस्था कर दी जहाँ नर्स ने सिर के घाव को साफ करके तीन टांके लगाए और पट्टी

लगा दी। हाथ के पंजे का घाव साफ करके दवाई लगाई और एक सप्ताह बाद आने के लिए कहा।

मैं घर में अकेला रहता हूँ, रसोई भी खुद बनाता हूँ। दुर्घटना का समाचार जानकर मेरे बड़े भाई-भाभी बहुत चिंता करने लगे और मेरे साथ रहने आने के लिए तैयार हो गए। मैंने कहा कि प्रभु की कृपा से मैं शारीरिक और मानसिक दोनों रूपों से सम्पूर्ण स्वस्थ हूँ, चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। मैंने उनको दूसरे दिन सुख-शान्ति भवन सेवाकेन्द्र पर आने के लिए कहा। वे आए और निमित्त बहन के साथ भेंट करके, बेहद का ईश्वरीय परिवार तथा पालना देखकर निश्चित हो गए।

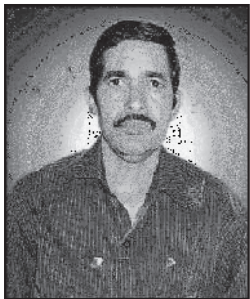
दुर्घटना के दूसरे दिन एक दुकानदार भाई ने बताया कि एक बाइक सवार आपके स्कूटर को आगे से टक्कर मारकर तेज गति से चला गया और आप स्कूटर पर पाँच-छह बार गोल-गोल चक्कर खाकर जोर से नीचे गिर गये। यह दृश्य देखकर मुझे लगा कि आप गए लेकिन कहावत है कि “जिसको राम रखे, उसको कौन चखे।”

सचमुच हजारों हाथ वाले भगवान ने मुझे कोई तकलीफ नहीं होने दी। तीन नवम्बर को प्रातःकाल सेवाकेन्द्र पर मुरली सुनी, 4 नवम्बर को गुजराती ज्ञानामृत पत्रिका के 12 बड़े थैले कालुपुर आर.एम.एस.पोस्ट ऑफिस में पोस्टिंग के लिए पहुँचाये और 5 तथा 6 नवम्बर को तीन जिज्ञासुओं को बाकी बचा ज्ञान का कोर्स भी पूर्ण करवाया।

इस प्रकार जीवन में आई हुई परीक्षा को मैंने बाबा तथा ईश्वरीय परिवार के सहयोग से बहुत सरलतापूर्वक पार किया। बावजूद बड़ी दुर्घटना के बाबा ने उसे सूली से कांटे समान बना दिया तथा आध्यात्मिक पुरुषार्थ एवं ईश्वरीय सेवा में कोई रुकावट नहीं आने दी। इसलिए बाबा का, खूब-खूब धन्यवाद। ❖

बाबा बने अधिवक्ता और न्यायाधीश

ब्रह्माकुमार मानसिंह, बालाघाट (म.प्र.)



मेरा जन्म जून, 1961 में ग्राम घुनाडी (कटंगी), जिला बालाघाट (म.प्र.) में हुआ। पिता जी एक सामान्य कृषक थे, वे प्रतिदिन रामायण, महाभारत अथवा शिवपुराण पढ़ने में आस्था

रखते थे। मैंने अपनी पढ़ाई शहर में आकर पूरी की और अब बालाघाट में शासकीय नौकरी करते जीवनयापन कर रहा हूँ। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय नाम मैंने कई बार सुना था और सेवाकेन्द्र कहाँ पर है, यह भी जानता था लेकिन कभी भी वहाँ जाने की या उसके बारे में जानने की इच्छा नहीं हुई क्योंकि नौकरी करते मैं दुर्व्यसनों का शिकार हो गया था। शराब, पान, सिगरेट, माँस आदि का सेवन करना मेरी रोज़ की आदत थी जिससे परिवार में अशांति बनी रहती थी।

हुई शान्ति की अनुभूति

वर्ष 2006 में मेरे घर के सामने ब्रह्माकुमारी पाठशाला का शुभारंभ हुआ जहाँ पर ज्ञान की बातें सुनने मेरी युगल जाने लगी। सत्संग से आने के बाद वो रोज़ मुझे ज्ञान सुनाने लगी लेकिन मैंने कभी भी उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया। वर्ष 2008 में माउण्ट आबू में राजयोग शिविर का आयोजन किया गया था जिसमें भाग लेने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ। शान्तिवन परिसर और माउण्ट आबू अवलोकन करने के बाद बहुत ही शांति की अनुभूति हुई और ऐसा लगा कि जैसे मैं अपने ही घर में हूँ और यहाँ पर कोई अलौकिक शक्ति है जो कार्य करा रही है।

परिवार हुआ खुशहाल

राजयोग सत्र के दौरान जब एक राजयोगिनी बहन जी ने परमात्मा का सत्य परिचय दिया और योग की अनुभूति

कराई तब सामने तेजोमय चमकता हुआ तारा और उससे आती प्रकाश की किरणें स्पष्ट दिखाई दी, यह जीवन का सबसे सुखद अनुभव रहा जिसने मेरे जीवन का परिवर्तन कर दिया। सात्विकता जीवन में आ गई, परिवार खुशहाल हो गया। नियमित मुरली सुनना और अमृतवेले उठ बाबा को याद करना मुझे अच्छा लगने लगा। मेरा यह सकारात्मक परिवर्तन मेरे साथ कार्य कर रहे कर्मचारियों को पसंद नहीं आया। वो अक्सर मुझे अपनी पुरानी महफिल में ले जाने का प्रयत्न करते रहते थे।

रिहाई हो गई

जीवन का बहुत बड़ा पेपर 7 मई, 2016 को आया, मुझे धोखे से थाने में बुलाया गया और अन्य दोषियों के साथ 420 के केस में अंदर कर दिया गया। मेरे ऊपर जो आरोप लगाए गए थे वे शासकीय नियमों व प्रावधानों के विपरीत थे। मैं निर्दोष हूँ, यह तो सिर्फ मैं, मेरा परिवार और बाबा ही जानते थे। मुझे कुछ दिनों के लिए जेल भेज दिया गया। जेल में रहते जब भी योग लगाने बैठता, यही कहता, बाबा, अब आप ही हो मुझे न्याय दिलाने वाले। आपको ही मेरे अधिवक्ता व न्यायाधीश बनना है। पेशी के लिए जबलपुर जाना हुआ। वहाँ न्यायाधीश और वकील ने थानाप्रभारी से ऐसे-ऐसे प्रश्न पूछे जिनके जवाब उनके पास थे ही नहीं। मेरे खिलाफ एक भी सबूत पेश नहीं किया जा सका और मेरी रिहाई हो गई। बाबा के साथ का अनुभव हम हर समय करते हैं लेकिन जीवन के ये कुछ ऐसे ही पल थे जो हमेशा के लिए यादगार बन गए। ❖

**बड़ा आदमी बनना अच्छी बात है पर
अच्छा आदमी बनना बहुत बड़ी बात है।**

सम्मान – मांगते वक्त कुरूप, देते वक्त सुन्दर

ब्रह्माकुमार विनायक, पाण्डव भवन, आबू पर्वत

आज 'चाहिए' शब्द ने संसार को अपने वश में ले लिया है। हर एक के मुख से बार-बार निकलता ही रहता है कि सुख चाहिए, शान्ति चाहिए, प्यार चाहिए, संपत्ति-महल-गाड़ी... चाहिए। 'चाहिए' का एक अति विकराल और सूक्ष्म रूप है, "मुझे सम्मान चाहिए।"

80 प्रतिशत मानसिक रोगों की जड़ है सम्मान की चाहना

बच्चे कहते हैं कि माँ-बाप से सम्मान मिले। माँ-बाप वृद्ध होकर बच्चों के आश्रय में जीते हैं तो आश रखते हैं कि बच्चे सम्मान से देखें। एक तरफ बहू चाहेगी कि ससुराल में मेरे साथ सम्मान से व्यवहार हो और दूसरी तरफ सास-ससुर सोचेंगे कि पढ़ी-लिखी बहू हमें सम्मान दे। पति-पत्नी आपस में सम्मान की प्राप्ति के लिए जिंदगी भर परेशान होते रहते हैं। अधिकारी को नौकर से सम्मान नहीं मिला तो नौकरी संकट में। नौकर को अधिकारी से सम्मान नहीं मिला तो दुखी होकर दूसरी नौकरी के लिए भटकता रहेगा। मेहमानों के सम्मान में थोड़ी भी कमी हुई तो दुबारा पैर भी नहीं रखेंगे। मनोवैज्ञानिक कहते हैं, आजकल मानसिक अस्पतालों में भर्ती होने वाले 80 प्रतिशत रोगियों की बीमारी की जड़ यही है कि "मुझे सम्मान नहीं मिलता।" इतना ही नहीं, लोग जीवघात भी कर लेते हैं इस सम्मान की चाहना के पीछे।

अब हमारे सामने यह प्रश्न है कि क्या सम्मान नाम का भाव इतना बहुमूल्य है? जैसे आहार, जल, वायु, धन आदि जीने के आधार हैं, परिश्रम, सहनशीलता, संयम, दृढ़ता आदि जीवन को मंजिल तक पहुँचाने के लिए आवश्यक हैं, वैसे ही क्या सम्मान भी जीवन को सफल बनाने का आधार है? अधिकतर लोगों का जवाब हाँ ही रहेगा। लेकिन हम इस सम्मान की उपयोगिता को जानने के लिए कुछ प्रयोग करेंगे।

केवल सम्मान से पेट नहीं भरेगा

एक व्यक्ति को सुबह नाश्ते के पहले से ही हम एक कमरे में बिठाएंगे और हर पल उसको सम्मान देते रहेंगे। हर बात में, हर कदम पर उसको सम्मान ही सम्मान इसके अलावा कुछ नहीं। ऐसे करते दो-तीन घंटे बीत जाने दें। क्या वह संतुष्ट रहेगा? नहीं। वह धीरे से आपके कान में कहेगा, "क्या मुझे थोड़ा-सा नाश्ता-पानी मिलेगा?" आप कह दो कि अरे! हर कदम पर इतना सम्मान मिल रहा है तो और कुछ मांगने की जरूरत ही नहीं होनी चाहिए! कुछ समय और बीतने दो, वह परेशान होकर बोलेगा, "भाई जी, मुझे कुछ तो खाने-पीने के लिए दे दो, नहीं तो मैं चक्कर खाकर गिर जाऊँगा।" सम्मान से इतना भरपूर हुआ है फिर परेशानी क्यों?... अब पता चला कि सम्मान से पेट नहीं भरेगा! इससे सिद्ध हुआ कि सम्मान कभी भी आहार और पानी बनकर शरीर को संभाल नहीं सकता।

सम्मान दवा और धन का काम नहीं करेगा

किसी बीमार व्यक्ति की, जिसको उच्च रक्तचाप और शुगर है, दवाई बंद कर दीजिए और बदले में बेहद सम्मान देते रहिए। तीन दिन के बाद आपको यह समाचार मिलेगा कि उसको अस्पताल में भर्ती कर दिया गया है क्योंकि रक्तचाप और शुगर सीमा से बाहर चले गये थे। कारण क्या था? सम्मान, दवाई के रूप में काम नहीं कर सका। नौकरी करने हेतु किसी को अपने पास बुलाइये और कहिए, "देखो, यहाँ महीने की तनखाह के पैसे नहीं मिलेंगे, उसके बदले हम आपको भरपूर सम्मान देते रहेंगे, चलेगा?" वह बोलेगा, "सर, मुझे घर-परिवार संभालना है, बिना पैसे थोड़े ही कुछ कर पाऊँगा? आप किसी और को देख लो" और चला जाएगा। पैसे के बदले जितना चाहिए उतना सम्मान हम देने को तैयार थे फिर भी वह नहीं माना, क्यों? क्योंकि मात्र सम्मान से आर्थिक

आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं हो सकतीं।

स्कूल के बच्चों की एक महीने तक पढ़ाई बंद करें और केवल सम्मान ही सम्मान देते रहें। महीने के बाद उनके प्रगति-पत्र पर नज़र घुमाने पर एक भी विद्यार्थी के अंकों में उन्नति नहीं दिखाई देगी बल्कि उनका चाल-चलन सुधरने के बजाय और भी बिगड़ा हुआ नजर आएगा। कारण? सम्मान, मानसिक या बौद्धिक प्रगति की नींव नहीं है, उसके लिए योग्य शिक्षा चाहिए।

मालिश नहीं, सहने होंगे प्रहार

सदा सम्मान पाते रहने से क्या हम सामाजिक क्षेत्र में महान व्यक्ति बन सकते हैं? इतिहास कहता है, विश्व में जो भी महान विभूतियाँ हुई हैं जैसे महात्मा गांधीजी, मदन टेरसा, नेल्सन मंडेला, एरिस्टोटल, अनेक आध्यात्मिक महापुरुष आदि तो जीवन भर अपमान, अवहेलना, कष्ट, कारावास सहन करके ही महान बने न कि सम्मान मांग कर। कायदा ही यह है कि मूर्ति बनकर यदि गायन योग्य कहलाना है तो छेनी-हथौड़ी के अनगिनत प्रहार सहने होंगे, न कि सम्मान की मालिश।

अब कहिए, कोई भी चीज अपना हो तो मनुष्य दस बार सोचता है कि उससे क्या लाभ है? फिर, सम्मान जो शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आर्थिक और सामाजिक – किसी भी रीति से लाभकारी नहीं है, बिल्कुल निष्प्रयोजन है, वह हमें चाहिए, यह रॉयल भीख क्यों?

आखिर क्या है सम्मान?

जैसे कामविकार सुप्त है लेकिन उसका प्रत्यक्ष रूप है स्त्री शोषण, सुप्त क्रोध का प्रत्यक्ष रूप लड़ाई-झगड़ा-तनाव, सुप्त लोभ का बाह्य रूप है चोरी-डकैती वैसे ही सुप्त अहंकार का बाह्य रूप है सम्मान की मांग। जैसे कुछ पेड़ बाहर से दुरुस्त दिखते हैं पर थोड़े-से धक्के में गिर पड़ते हैं क्योंकि जड़ के भीतर दीमक लगी हुई थी वैसे ही सम्मान की इच्छा भी अंदर से खोखला कर कमजोर बनाने वाला भयंकर कीड़ा है।

सम्मान की इच्छा रखने से

हम किन-किन बातों से वंचित होंगे?

- जैसे भिखारी सामने आकर कुछ मांगता है तो भले ही हम तरस खाकर दो-चार आने झोली में डाल देते हैं पर बोलते भी हैं, आगे चलो अर्थात् कोई भी उसके साथ संबंध-संपर्क नहीं रखना चाहता या उसे अपना नहीं समझता। वैसे ही सम्मान पाने की इच्छा रखकर हम जब किसी के संबंध-सम्पर्क में आते हैं तो भले ही हमारी वेश-भूषा कितनी भी सुंदर क्यों न हो परन्तु वातावरण वही निर्माण होगा जो पैसे मांगने वाले भिखारी के आस-पास था। यहाँ भी लोग दिखावे की महिमा करेंगे लेकिन दिल से आशीर्वाद नहीं निकलेगा, किनारा करने की कोशिश करेंगे। सम्मान मांगने की इच्छा रखना अर्थात् सम्मान के बदले सर्व की नफरत के शिकार बनना, सब का स्नेह-प्यार गँवा देना।
- सबसे अमूल्य गुण है संतुष्टता। संतुष्ट आत्मा का ही गायन, पूजन होता है। सम्मान पाने की प्यास से संतुष्टता चले जाने के कारण गायन-पूजन योग्य बनने से वंचित रह जाते हैं। सदा असंतुष्ट रहने के कारण अनेक प्रकार की शारीरिक व मानसिक पीड़ाओं के मोहरे बन जाते हैं।
- सम्मान नहीं मिलता इस कारण से हम कई व्यक्तियों से मिलना और कई स्थानों पर जाना छोड़ देते हैं। उस स्थान पर हम जो सेवा का भाग्य बना सकते थे उससे स्वयं को वंचित कर देते हैं।
- निर्-मान ही निर्माण कर सकता है लेकिन सम्मान की बीमारी निर्माण बनने नहीं देगी तो निर्माण भी नहीं कर पाएंगे। स्वयं ही मान-शान के भूखे होने के कारण दूसरों का सम्मान भी नहीं रखेंगे, इसलिए संगठन की शक्ति बढ़ाने में अपना योगदान नहीं दे सकेंगे।
- इस बीमारी से उमंग-उत्साह, जो पुरुषार्थ के दो पंख हैं, के दुर्बल हो जाने से साधना के मार्ग पर चलना कठिन महसूस होने लगता है।
- साधना की वृद्धि को ही रोक देने वाला महाघातक है यह

क्योंकि अगर सम्मान नहीं मिला तो दुखी होकर साधना छोड़ देंगे, अगर मिला तो उसी को मंजिल समझकर वहाँ ही रुक जाएँगे।

● जैसे मीठा ज़हर पीते वक्त तो मीठा लगता है लेकिन जानलेवा है। वैसे ही सम्मान भी मिलते वक्त तो मीठा लगता है परन्तु उससे बढ़ने वाला देहाभिमान सदाकाल के लिए आत्माभिमानी अवस्था को समाप्त कर देगा अर्थात् साधना की मंजिल तक पहुँचने ही नहीं देगा।

● विजयमाला में आने का आधार है संस्कारों का मंगलमिलन, जहाँ मैं और तू का भान ही नहीं। सम्मान की इच्छा वाले व्यक्ति के चारों तरफ अहंकार की दीवार बन जाने के कारण वह अन्य आत्माओं के साथ संस्कारों का मंगलमिलन नहीं कर सकता अर्थात् विजयमाला में आने के सुवर्ण अवसर से वंचित रह जाएगा।

● एक आश्चर्यजनक बात! इस सम्मान के दो पहलू हैं। एक भयानक और एक सुंदर। जैसे दान के भी दो पहलू होते हैं। जब कोई व्यक्ति स्वयं के लिए किसी से दान मांगता है तब समझा जाता है कि उस व्यक्ति की अधम अवस्था है लेकिन अगर कोई किसी को दान दे रहा है तो वह अच्छी अवस्था है। वैसे ही सम्मान मांगना यह नीची अवस्था है तो सम्मान देना ऊँचे संस्कार वाले मनुष्य का लक्षण है। मांगते वक्त जो चीज कुरूप दिखती है, देते वक्त वही चीज सुंदर रूप धारण कर लेती है।

सम्मान देने से उन्नति

● देना अर्थात् भरपूर रहना। सदा शुभ संकल्पों से और

संतुष्टता से भरपूर रहने वाले ही सम्मान दे सकते हैं।

● कहते हैं, सम्मान दो और सम्मान लो। यह तो व्यापार हुआ, जो हमारा आदर्श नहीं। निस्वार्थ होकर किसी को सम्मान देना, यह है सकारात्मक कर्म जो श्रेष्ठ चरित्र की नींव है।

● सम्मान देना अर्थात् अपनेपन का वातावरण निर्मित करना जिससे संगठन का किला मजबूत होगा, जो हर एक को सहारे की अनुभूति कराएगा।

● सम्मान देना अर्थात् आरंभ किये हुए कार्य को निश्चित सफलता से संपन्न करना। सेवाक्षेत्र में आने वाला सबसे बड़ा विघ्न है संस्कारों का टकराव। इसको समाप्त करने की युक्ति है सम्मान देना।

● बाबा कहते हैं, पुरुषार्थ में तीव्र गति से आगे बढ़ने का साधन है दुआ जमा करना। दुआ प्राप्त करने की सबसे सरल और परिणामकारी विधि है सम्मान देना।

● वस्तु का महत्त्व, उसकी उपयोगिता पर निर्भर है। हीरा, इस दुनिया में सबसे सुन्दर और अनमोल वस्तु तो है लेकिन मात्र सजावट के लिए। अगर हम उसका सेवन करेंगे तो उस जैसा जहर कोई नहीं। वैसे ही सम्मान को स्वयं सेवन करेंगे तो निश्चित ही वह हानिकारक है लेकिन केवल देने के लिए उपयोग करें तो सचमुच संजीवनी है।

● “बाप समान अवस्था” तक अगर पहुँचना है, तो स्वयं के लिए सम्मान की इच्छा, जो सम्पूर्ण अनुपयोगी है, से इच्छा मात्रम् अविद्या बनेंगे और सम्मान देने के लिए सदा महादानी स्वरूप धारण करेंगे। ❖

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी

घुटनों व कूल्हों की प्रत्यारोपण सर्जरी नियमित हर महीने के अंतिम सप्ताह में की जाती है। यह सर्जरी यू.के., ऑस्ट्रेलिया और जर्मनी से प्रशिक्षित, मुम्बई के कुशल एवं अनुभवी सर्जन डॉ. नारायण खण्डेलवाल द्वारा की जाती है। अग्रिम चेकअप तथा सर्जरी की तारीख जानने के इच्छुक मरीज संपर्क करें: डॉ. मुरलीधर शर्मा, ग्लोबल

हॉस्पिटल, माउंट आबू, राजस्थान **मोबाइल:** 09413240131 **फोन:** (02974) 238347/48/49

वेबसाइट: www.ghrc-abu.com **फैक्स:** (02974) 238570

ई-मेल: murlidharsharma@gmail.com

मेरा आकाश, मेरा क्षितिज

ब्रह्माकुमार शक्तिराज सिंह, शान्तिवन

(पिछले अंक में हमने जाना कि बाह्य घटनाओं को हम नहीं टाल सकते परन्तु कुम्हार की तरह कुछ निर्माण अवश्य कर सकते हैं। प्रत्येक असफलता से यह सीखना होगा कि हमने सफलता के मार्ग से एक अवरोध को हटा दिया है। एक बार फिर से प्रयत्न करने का दृढ़ संकल्प जिसके पास है, उसकी विजय अटल है। बिना निराश हुए पराजय को सहना, साहस की सबसे बड़ी परीक्षा है। हम क्या कर सकते हैं, दुनिया को बताइये मत, करके दिखाइये.....सम्पादक)

सोचें केवल सफलता के बारे में

असफल होने के कारणों की सूची बनाकर किसी लक्ष्य को हासिल करना असंभव है। ऐसा करने से मन की पूरी शक्ति असफलता के चित्र बनाने में केन्द्रित हो जाती है और अंततः उन्हें असफलता ही हाथ लगती है। इसलिए जीवन के उन क्षणों को याद कीजिए जब आप सफल हुए थे। केवल सफलता के बारे में सोचें और सफल होने के कारणों की सूची बनाएँ। ऐसा करने से आप उन सफल तरंगों को ब्रह्मांड तक पहुँचा रहे हैं और ब्रह्मांड आपको वही देगा जो आप चाहते हैं। श्रीमद्भगवत् गीता में भगवानुवाच है कि “आदमी वही करता है, जो वो चाहता है। पर होता वही है जो वो (भगवान) चाहता है इसलिए कर वो, जो वो चाहता है, फिर होगा वही जो तू चाहता है।”

समय किसी के लिए नहीं रुकता

सारी दुनिया में जहाँ कहीं भी आपके सफल होने के अवसर छुपे होंगे नियति उन्हें आपके सामने लाकर खड़ा कर देगी। स्वयं को बदलने के सिवाय दूसरा विकल्प ही नहीं है। हालात बदलते एक पल भी नहीं लगता। किसी भी वक्त परिस्थिति विपरीत हो सकती है। समय किसी के लिए नहीं रुकता। अगर आप अनुकूल परिस्थिति में हैं तो स्वयं को भाग्यशाली समझिये और उस परमपिता परमात्मा, ऊर्जा के स्रोत का धन्यवाद मानिये। तुरंत काम में लगिये क्योंकि सफलता पाने के लिए आपको बहरा बनना पड़ेगा दुनिया से। आप सोचते होंगे, क्यों? आइये हम एक बहुत ही रोचक और जीवन को बदलने वाली कहानी सुनते हैं।

भगवान और मैं कर सकते हैं सपनों को साकार

एक बार मेंढकों के एक समूह के बीच एक दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, उसमें विजेता को पहाड़ी की चोटी पर चढ़ना था। इस अद्भुत प्रतियोगिता को देखने के लिए भारी भीड़ उमड़ पड़ी थी और वे प्रतियोगियों का उत्साह बढ़ा रहे थे। दौड़ की शुरुआत हुई, सच मानिए, उस विशाल भीड़ में किसी को विश्वास नहीं था कि एक छोटा-सा मेंढक उस पहाड़ी की चोटी तक पहुँच जायेगा। भीड़ से तरह-तरह की आवाज़ें आ रही थीं जैसेकि रास्ता बहुत कठिन है, वे पहाड़ी की चोटी तक नहीं पहुँच सकते, सफल होने का कोई मौका ही नहीं है क्योंकि पहाड़ी बहुत ऊँची है। जैसे ही ये शब्द दौड़ते हुए मेंढकों के कानों में जाते, एक के बाद एक वे गिर जाते, कुछ रुक जाते परन्तु उनमें से एक छोटा मेंढक बिना इधर-उधर देखे चढ़ाई चढ़ते जा रहा था। भीड़ का चिल्लाना लगातार जारी था परन्तु एक छोटे युवा मेंढक ने हार नहीं मानी। अन्य सभी मेंढकों ने पहाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते हार मान ली परन्तु वह साहसी छोटा मेंढक अपने अथक परिश्रम से उस पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर सफलता को चूम सका। सभी मेंढक आश्चर्यचकित थे क्योंकि एक असंभव कार्य संभव हो चुका था। वे सभी जानना चाहते थे कि उस मेंढक ने असफलता को सफलता में कैसे बदला। बाद में पता चला कि विजेता मेंढक बहरा था। इस कहानी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि मत सुनो उन लोगों के नकारात्मक शब्दों को क्योंकि वे आपको आपके दिली सपनों से बहुत दूर ले

जायेंगे। इसलिए कुछ भी हो, Be Positive (सकारात्मक बनो), बहरे बनो। जब लोग आपको कहें कि आप अपने सपनों को साकार नहीं कर सकते हैं। तब सोचो, 'भगवान और मैं यह कर सकते हैं।'

वैज्ञानिक एडिसन एक सहयोगी के साथ शोध कार्य में लगे थे। जब 700 प्रयोगों के बाद भी सफलता नहीं मिली तो सहयोगी ने हताश होकर प्रयोग बंद करने को कहा। आइंस्टीन ने कहा कि हम विफल नहीं हुए हैं। हमने 700 दिशाओं में खोज की है और अब जो बहुत कम दिशाएँ (विकल्प) बची हैं, सफलता उन्हीं में से किसी एक में है। अंततः सफलता मिल ही गई।

जीतने की आदत बनाइये

इंसान जीवन की मुश्किलों से घबराकर लक्ष्य को भूल जाता है। कई ओलंपीयन्स हैं जिनके जीवन में आए कठिन हालातों ने उन्हें हताश किया था परन्तु वे टूटे नहीं। हर बार नए सिरे से जुट गए। आत्मविश्वास के लिए अभ्यास ज़रूरी है, तभी आप दुनिया से कह सकते हैं, 'आई एम द बेस्ट'। जितना जल्दी हो सके, जीतने की आदत बनाइए, लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में काम कीजिए। हार का सामना हर किसी ने किया है पर जीत उसी की हुई है जिसने संघर्ष जारी रखा। यदि लक्ष्य हासिल करना है, तो भावनात्मक रूप से मज़बूत बनना पड़ेगा, नहीं तो मेहनत पर पानी फिर जायेगा। दुनिया में हर इंसान को मनचाही चीज़ें नहीं मिलती। जैसी भी परिस्थितियाँ हों, जीतने के लिए जुनून चाहिए। ❖



खत्म हुआ दौरों का दौर ब्रह्माकुमारी चंद्रकला, कामठी (महाराष्ट्र)

मेरा जन्म एक बहुत ही साधारण परिवार में हुआ। सब अच्छे से चल रहा था कि अचानक ही मेरी तबीयत बहुत खराब हो गई। उस समय मैं 10वीं कक्षा में पढ़ती थी। दिमाग के डॉक्टर ने चेक करके बताया कि दौरे आने की बीमारी है। तब से एलोपैथिक, होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक – हर प्रकार की दवाइयों से इलाज करवाया। घर के लोग तांत्रिक के पास भी ले गये पर इतना सब कुछ करने के बाद भी बीमारी बढ़ती ही गई। रातभर में पाँच-छह बार दौरे पड़ने लगे। सभी चिंतित रहने लगे, मुझे भी तनाव रहने लगा क्योंकि पढ़ाई पर बुरा असर पड़ रहा था। फिर भी मैंने किसी तरह पढ़ाई पूरी की।

सन् 2009 में ब्रह्माकुमारीज़ के द्वारा मोटर साइकिल अभियान निकाला गया था, जो हमारे गाँव में भी आया और कार्यक्रम का आयोजन हमारे घर के सामने चौक में हुआ। लौकिक पिताजी के चाचा-चाची और उनका पूरा परिवार बहुत समय से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा है। कुछ दिन के बाद हमारे घर में ही ब्रह्माकुमारीज़ पाठशाला खुल गई। मैं रोज क्लास करने लगी। तीन महीने बाद आबू में अव्यक्त बाबा से मिलन हुआ और एक साल बाद सेवाकेन्द्र पर आई तथा एक बार बीस दिन के लिए सेवाकेन्द्र पर सेवा के लिए रुक गई। जब सेवाकेन्द्र पर रुकी तभी से बाबा ने मेरा इलाज शुरू किया। आश्चर्य यह हुआ कि उस दिन से आज तक (सात साल) एक बार भी दौरा नहीं पड़ा और न ही उस बीमारी के लिए कोई दवाई ली।

बाबा कहते हैं, हिम्मत का एक कदम आगे बढ़ाओ तो बाबा हज़ार कदमों से हमारा साथ देते हैं। मैं तो यह कहूँगी कि हिम्मत का एक कदम आगे बढ़ाने की हिम्मत भी बाबा ने ही मुझे दी। तब से लेकर आज तक बाबा के घर में सेवायें दे रही हूँ। निमित्त बहन और साथी-सहयोगी बहनों ने इतने प्यार से सम्भाला जो कभी लौकिक घर की याद भी नहीं आयी।

मैंने देखा है कि इस बीमारी के जो मरीज़ होते हैं, वे या तो कोमा में चले जाते हैं या पागल हो जाते हैं लेकिन बाबा ने मेरी इतनी मदद की जो मैं बाबा को पहचान पाई। सच कहूँ तो यह नया जीवन मुझे बाबा ने दिया है। बाबा की छत्रछाया में पलते मैं अपने आपको बहुत ही खुशानसीब अनुभव कर रही हूँ। ❖

उमंग-उत्साह सम्पन्न जीवन

ब्रह्माकुमार भारतभूषण, पानीपत (हरियाणा)

उमंग-उत्साह से भरपूर जीवन एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। बड़े से बड़े लक्ष्य हासिल करने की उमंगों और कुछ विशेष कर दिखाने का उत्साह सदैव मन में बना रहे, यही उमंग-उत्साह मानव जीवन की रग-रग में बहने वाला खून है। उमंग-उत्साह इतना हो कि दिन भर में जो भी मिले वो भी उमंग-उत्साह से भरपूर हो जाए। उमंग-उत्साह से संपन्न ऐसा जीवन बनाने के लिए निम्नलिखित बातें ध्यान में रखें –

असंभव को संभव करना

जो कार्य असंभव दिखते हों यदि उनको संभव कर दें, जिन लक्ष्यों को हासिल करना आम व्यक्ति के लिए नामुमकिन है, उन्हें हम हासिल कर लें, तो जीवन में अति उमंग-उत्साह भर जाता है। आत्मा उमंग में ऐसी उड़ान भरती है जो रग-रग में खुशी समा जाती है।

विशेषता-दर्शन

उमंग-उत्साह से भरपूर रहने के लिए सदैव स्वयं की एवं सर्व की विशेषताओं को देखें, विशेषताओं का ही चिंतन करें, विशेषताओं का वर्णन करें। भगवान ने मुझे क्या-क्या विशेषताएँ दी हैं उनकी लिस्ट निकालें और उन्हें सदैव स्मृति में रखें। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं जिसको भगवान ने कोई खूबी न दी हो अतः उसकी खूबी को स्मृति में रख उसको ऊँची दृष्टि से देखें। इस प्रकार सर्व को ऊँची दृष्टि से देखने से एवं स्वयं को भी महान आत्मा, विशेष आत्मा समझने से हमारा जीवन उमंग-उत्साह से भरपूर हो जाएगा।

नए-नए कार्य करना

जो आम दुनिया कर रही है उससे हटकर कुछ नया कर दिखाने की तमन्ना हो। नवीनता, जीवन को उमंग-उत्साह से भरपूर कर देती है। सदा बुद्धि में रहे कि कुछ नया करना है, कुछ हट कर करना है। वो ही पुरानी चाल,

वो ही पुराने तौर-तरीके, इसकी बजाए जीवन में नवीनता लाएँ।

सच्चे दिल से बेहद विश्वसेवा करना

दिल से सेवा करना, निःस्वार्थ-निष्काम सेवा करना उमंग-उत्साह से भरपूर कर देता है। दिनभर में लक्ष्य हो कि मुझे हड्डी-हड्डी सेवा में लगानी है और बेहद की सेवा के निमित्त बनना है। दूसरों की सच्चे दिल से सेवा करने से दुआयें मिलती हैं। ये दुआएँ ही जीवन को उमंग-उत्साह से भरपूर कर देती हैं।

सफलताओं का सिमरण

जीवन में सफलता एवं असफलता दोनों प्राप्त होते हैं लेकिन उमंग-उत्साह सम्पन्न जीवन बनाने के लिए अपनी सफलताओं की लिस्ट निकालो और उनको स्मृति में लाते हुए भगवान का बहुत-बहुत शुक्रिया करो। इसी प्रकार जीवन में क्या-क्या प्राप्तियाँ हुई हैं, अपनी उन प्राप्तियों का भी सिमरण करते रहने से जीवन उमंग-उत्साह से भरपूर हो जाता है।

सर्वसमर्थ साथी भगवान की स्मृति

सदैव स्मृति रखें कि सर्वसमर्थ सर्वशक्तिवान स्वयं भगवान हर समय मेरे साथ हैं। जब हज़ार भुजाधारी परमात्मा साथ हैं तो चिंता की क्या बात है। जिसको किसी महान हस्ती का साथ मिल जाए तो उसका उमंग-उत्साह कई गुणा बढ़ जाता है। हमें तो ऐसे साथी मिले हैं जो सर्वसमर्थ हैं और बड़े-बड़े कार्य अति सहज कर देते हैं, हर समस्या का समाधान कर देते हैं।

योग की गहन अनुभूतियाँ

उमंग-उत्साह भरा जीवन बनाना है तो अपने जीवन को योग की अनुभूतियों से भर दो। विशेष कर कर्मयोग का अनुभव हो। हर कर्म करते योग की गहन अनुभूति भी करें और विशेष बैठ कर भी प्रतिदिन कम से कम भी दो-तीन

घण्टे गहन अनुभूति वाला योग करें तो जीवन उमंग-उत्साह से भरपूर हो जाएगा।

हर बात में कल्याण

कल्याणकारी संगमयुग में कल्याणकारी शिव पिता परमात्मा की संतान हम सभी का कदम-कदम पर कल्याण है। यदि यह दृढ़ निश्चय हो तो हम सदैव उमंग-उत्साह में रहेंगे। भले ही कभी-कभी सम्मुख आयी हुई परिस्थिति में अकल्याण नज़र आता है लेकिन गहराई से सोचेंगे तो उसमें भी भारी कल्याण नज़र आएगा और कोई कल्याण न भी नज़र आए, कम से कम यह कल्याण तो हर एक को नज़र आता ही है कि उस परिस्थिति से हमारी सहनशक्ति बढ़ी। भगवान का शुक्रिया कि उन्होंने सहनशक्ति बढ़ाने का मौका दिया, इस कल्याण में निश्चय होते ही उमंग-उत्साह का पारा चढ़ जाएगा।

ज्ञान की गहराई

ज्ञान ऊपर-ऊपर से सुन लेने से या जान लेने से इतना नशा नहीं चढ़ता जितना कि गहराई में जाने से रोम-रोम खुशी से भरपूर हो जाता है। इसलिए उमंग-उत्साह सम्पन्न जीवन बनाने के लिए ज्ञान की गहराई में जाओ अथवा ज्ञान को जीवन में गहराई से उतारो। इसके लिए प्रतिदिन की दिनचर्या में कुछ समय निश्चित कर विचार सागर मंथन करो, इससे स्वतः ही ज्ञान की गहराई में उतर जायेंगे।

सर्व का उमंग-उत्साह बढ़ाने की सेवा

जितना दूसरों का उमंग-उत्साह बढ़ाने की सेवा करेंगे उतना स्वयं का उमंग-उत्साह बढ़ता जायेगा। दिनभर में जो भी मिले उसे बहुत ही उत्साहवर्धक शब्द बोलें। सम्बन्ध-सम्पर्क में जो भी आये उसकी खूबियों का वर्णन कर उमंग-उत्साह से सम्पन्न बना दें। दूसरों का उमंग-उत्साह बढ़ाने से स्वयं भी सदैव उमंग-उत्साह संपन्न रहेंगे। ❖

हम और (अ) हम

ब्रह्माकुमार सुनील कुमार दुबे, इन्दौर

बात उन दिनों की है जब मैं कक्षा आठवीं में पढ़ रहा था। पिताजी के एक मित्र ने, जो खानदानी समृद्ध थे, एक भव्य मकान बनवाया। उस समय के आधुनिकतम सामानों से सुसज्जित मकान को देखकर आँखें खुली की खुली रह गयी थीं। वे मित्र, पिताजी को मकान के हर कोने में ले जाकर बता रहे थे कि मैंने यहाँ यह लगवाया, देखो, ये सामान मुम्बई से मंगवाया, ये कानपुर से मंगवाया और वह देखो, बाथरूम का सामान थाईलैण्ड से मंगवाया आदि-आदि। निःसंदेह मकान भव्य था पर उनकी बातों में 'मैं-पन' का बार-बार उपयोग मेरे हृदय में हथौड़े मार रहा था। मैं सोच रहा था कि मकान खानदानी रूपयों से बनवाया गया है (इनकी स्वयं की इतनी हैसियत नहीं है), फिर भी 'मैं-पन' का बार-बार प्रयोग। यदि मनुष्य अपनी हैसियत से भी कोई कार्य सम्पादित करे तो भी 'मैं-पन' का अहसास प्रदर्शित नहीं होना चाहिए फिर यह तो पैतृक सम्पत्ति थी। कहा गया है, **उम्र तथा पैसे पर कभी गर्व न करें क्योंकि जो चीज गिनी जा सकती है वह यकीनन खत्म हो जाती है।** अहम् के आसमानों पर उड़ने वालों को ज़मीं पर आने में वक्त नहीं लगता। शान्त तथा विनम्र व्यक्ति से अपनी तुलना करने पर हम पाएंगे कि अहम् का चोला निश्चित तौर पर त्यागने जैसा है। अपने को निमित्त-मात्र समझते हुए, अपने समस्त कार्य-उपलब्धियाँ बाबा को ही समर्पित करके आगे बढ़ें, अवश्य ही कामयाब होते जाएंगे। ध्यान रखें, निमित्त भाव के अभाव में, कामयाबी अहम् पैदा करती है तथा नाकामी दिल में मायूसी।

हमारा 'मैं-पन' हमारे रिश्तों को भी प्रभावित करता है। अहम् में चूर होकर हम अपने धन तथा गुणों का बार-बार बखान करते हैं और दूसरों के अवगुणों तथा कमज़ोरियों को बार-बार चिन्हित करने की गलती कर बैठते हैं। रिश्तों को संवारना है तो अहम् त्यागकर 'रहम' का उपयोग करें, रिश्ते अधिक मजबूत होंगे। कहा गया है –

“पत्तों-सी होती है, कई रिश्तों की उम्र।

आज हरे, कल सूखे, क्यों न हम जड़ों से सीखें।”

बाबा ने की जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा

ब्रह्माकुमार देवजी भाई तथा ब्रह्माकुमारी दूधी बहन, पडधरी (खामटा गाँव), राजकोट (गुजरात)



मैं (देवजी) और मेरी युगल (दूधी) 6 साल से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहे हैं और 5 साल से बाबा मिलन के लिए आबू आया-जाया करते हैं। हम दोनों गाँव में रहते हैं और हमारे तीन सुपुत्र राजकोट शहर में रहते हैं। हम दोनों कभी-कभी थोड़े दिन पुत्रों के पास रहने के लिए चले जाते हैं लेकिन युगल कभी भी, कहीं भी गहने साथ लेकर या पहनकर नहीं जाती हैं।

इस बार जब आबू के लिए चलने की सारी तैयारी कर ली तब तक युगल को याद नहीं आया कि उसके गले में सोने की चेन है। निकलते-निकलते अचानक याद आया तो चेन निकालकर शो-केश (काँच की अलमारी) में श्री राधे-कृष्ण की फोटो के नीचे रख दी और पूरा घर बाबा को सौंपकर हम आबू चले गए।

शान्तिवन के डायमण्ड हॉल में दिनांक 07-03-2016 की शाम 7.30 बजे बाबा का अवतरण हुआ और उसी रात को हमारे घर में चोरों का आगमन हुआ। उन्होंने सब ताले तोड़ दिये परन्तु सारी रात मेहनत करने के बावजूद उनके हाथ कुछ नहीं लगा। सोने की चेन भी उनको दिखाई नहीं दी।

अगली सुबह हमने बेटे को फोन करके कहा, घर कई दिनों से बंद है, खेत में मजदूर भी काम करते हैं तो सब देख

करके आओ। जब बेटा घर पर पहुँचा तो देखा, पूरे घर में सामान इधर-उधर बिखरा पड़ा है। सभी दरवाजों और अलमारियों के ताले टूटे हुए हैं। पता चल रहा था कि घर में चोरी हुई है। उसने हमको फोन करके बताया कि पुलिस को बुलाया है, आप बताओ घर में क्या-क्या था। मैंने कहा, मैंने तो कुछ नहीं रखा है, तुम्हारी माँ को पूछता हूँ। युगल को पूछा तो कहने लगी, कोई बात नहीं, कल्प पहले जो हुआ था, वो हो रहा है, चोरों के साथ हमारा हिसाब-किताब होगा वो चुक्ता हो गया, आप बेफिक्र रहो, घर में कुछ भी नहीं था और अगर कुछ होगा भी और चला भी गया होगा तो भी कोई हर्जा नहीं क्योंकि देने वाला हज़ार हाथों वाला मेरा बाबा है, बेचारे चोर क्या लेकर जायेंगे? चिंता मत करो।

पार्टी में आए हुए भाई-बहनों को पता चला तो वो बाबा के प्रति हमारा निश्चय देखकर आश्चर्य में आ गए। हम तो बेफिक्र बादशाह बनकर फिर पाण्डव भवन भी गए और आराम से 10.05.2016 को घर जाने के लिए निकले। घर पहुँचकर देखा कि चेन वहाँ ही रखी थी। कोई कीमती सामान नहीं गया था। सभी अलमारियाँ देखीं। एक अलमारी में कपड़े थे, वहाँ सामने ही रुपयों का बंडल दिखाई दिया। ये रुपये भी थे, इन्हें देखने के बाद ही हमको याद आया लेकिन वो रुपये सामने होते हुए भी चोरों को दिखाई नहीं दिये। ये सभी चीजें जैसे कि बाबा की नज़रों के अंदर सुरक्षित थी।

हमने यह भी सोचा कि अगर हम यहाँ होते तो हमारा जीवन भी मुश्किल में पड़ जाता। चोर हमें भी मार सकते थे। इस प्रकार बाबा ने हमारे शरीर और धन-संपत्ति की रक्षा की। बस, अब दिल से यही गीत निकलता है, वाह बाबा वाह! ❖

रास्ता सही है, अनुभव हो गया

ब्रह्माकुमार डॉ.मल्हार देशपांडे, नेत्र विशेषज्ञ, मालेगांव (महाराष्ट्र)

मैं खूब भक्ति करता था, बचपन में मैंने कोई खेल खेला नहीं, भगवान की छोटी मूर्ति लेना, उसकी पूजा-अर्चना करना, प्रसाद बाँटना – यही मेरा खेल होता था। घर वाले या मेहमान कोई यदि मुझे पैसे देते थे तो मैं तुरंत उन पैसे को पूजा-अर्चना में ही खर्च करता था। बड़ा होकर एम.बी.बी.एस.का विद्यार्थी बना, फिर भी मेरा यह संस्कार कम नहीं हुआ। स्वामी विवेकानंद, स्वामी शिवानंद, हिमालयन योगी, योगी अरविंद, शेरली मॅकलीन – इनकी किताबें पढ़ता रहता और भक्ति के रहस्यों को जानने की कोशिश करता रहता था। भक्ति में मुझे बहुत ज्यादा साक्षात्कार भी होते थे, इसी कारण भक्ति पर मेरा दृढ़ विश्वास होता गया।

विचार आया, क्या यह सही मार्ग है

जब मुझे ईश्वरीय ज्ञान मिला तब मन में विचार आया, क्या यह सही मार्ग है, कहीं मैं भगवान को छोड़ तो नहीं रहा हूँ, अभी तक जो अनुभव हुए वो क्या थे? इस प्रकार विचारों का सागर मंथन चलता रहता था। ऐसे में एक दिन कई लेजर ऑपरेशन थे, मैंने मन ही मन सोच लिया, आज ऑपरेशन में भगवान की शक्ति का प्रयोग करूँगा और देखता हूँ, क्या होता है, अगर यह रास्ता सही है तो कुछ तो अनुभव ज़रूर होगा।

ऑपरेशन में भगवान की शक्ति का प्रयोग

उस दिन मैंने लेजर ऑपरेशन के लिए पहला मरीज़ लिया, अपने को आत्मा समझ बाबा को याद किया और लेजर किरण फायर किया (लेजर मशीन का बटन दबाने से लेजर फायर होता है)। केवल एक ही बार में उस मरीज़ का लेजर पूर्ण हो गया। मरीज़ को ज़रा भी तकलीफ नहीं हुई। उसने ना आँख झपकी, ना कसकर बंद करने की कोशिश की। मैं बहुत खुश हुआ, मेरे सहायक ने दूसरा मरीज़ लेजर

के लिए बिठाया। मैंने फिर से अपने को आत्मा समझा, बाबा को याद किया और लेजर फायर किया। इस मरीज़ का भी लेजर केवल एक ही फायर में पूर्ण हुआ, ना पलक झपकी, ना कसकर बंद करने की कोशिश की, ना दर्द हुआ। मेरी खुशी और बढ़ी। मेरे सहायक एक-एक मरीज़ को बिठाते गये। मैं अपने को आत्मा समझ बाबा को याद करके लेजर फायर करता रहा। इस प्रकार आठ मरीज़ हुए, मैं तो जैसे खुशी में नाच रहा था क्योंकि ऐसा कभी मैंने अपने जीवन में ना देखा था, ना महसूस किया था। आठों मरीज़ों का केवल एक फायर में, बिना किसी तकलीफ के लेजर पूर्ण हुआ।

कई दिन तक खुशी में नाचता रहा

उस दिन कुल 9 मरीज़ थे, सहायक ने आखिरी मरीज़ को बिठाया। मैंने उसकी आँख पर लेजर फायर किया परंतु लेजर पूर्ण नहीं हुआ। तीन फायर किए। मैं पलभर रुककर सोचने लगा कि ऐसा क्यों हुआ। तब मुझे पता चला, पहले आठों मरीज़ों के समय हर बार अपने को आत्मा समझा, बाबा को याद किया किंतु इस मरीज़ के समय मैं अपने को आत्मा समझना तथा बाबा को याद करना भूल गया था। मैं केवल खुशी में था और रोज़मर्रा की तरह लेजर फायर कर रहा था। मैंने रुककर अपने को आत्मा समझा और बाबा को याद किया। फिर उस मरीज़ का लेजर किया। केवल एक फायर में उसका लेजर पूर्ण हुआ। इस अनुभव के बाद मैं कई दिन तक खुशी में नाचता रहा। अब भी जब इसे याद करता हूँ तो खुशी की वही लहर मन को छू लेती है। मेरा निश्चय दृढ़ हो गया कि यही मार्ग सही है। ❖

कौन-से कपड़े पहनूँ जिससे मैं अच्छा लगूँ, ये तो हम हर रोज सोचते हैं पर कौन-सा कर्म करूँ जिससे भगवान को अच्छा लगूँ, क्या यह भी कभी सोचते हैं ?

जीवनदान का मिला वरदान

ब्रह्माकुमारी हेमा जोशी,
मालेगाँव कैम्प (महाराष्ट्र)



मैं तीन साल से बाबा के ज्ञान में चल रही हूँ। मुझे एक लड़की, एक लड़का है। बेटे के बारे में बाबा ने मुझे बहुत ही दिव्य अनुभव कराया। बाबा का बहुत-बहुत शुक्रिया।

जनवरी, 2015 की एक शाम मेरे बेटे अभिषेक को कबड्डी खेलते समय एक लड़के का घुटना सिर पर, गर्दन पर जोर से लगा। उसी समय बेटे के हाथ-पैर की पूरी ताकत निकल गई, उसकी आवाज भी बहुत कम हो गई। वो नीचे गिर पड़ा। उस समय मैं सेवाकेन्द्र पर मुरली सुन रही थी। मुरली में बाबा ने कहा, जब कोई भी विघ्न आये तब बाबा को दिल से याद करेंगे और एक बल, एक भरोसा रखेंगे तो बाबा हर प्रकार से मदद करेगा और आप विघ्नों पर विजयी बनेंगे। केवल 10 ही मिनट के बाद मेरे पति मुझे सेवाकेन्द्र पर बुलाने आये। हम दोनों हॉस्पिटल पहुँचे, वहाँ बहुत भीड़ थी। डॉक्टर ने हमें अंदर बुलाकर कहा, बच्चे की गर्दन को जोर से मार लगी है, उसे तुरंत नासिक में न्यूरो सर्जन के पास लेकर जाना पड़ेगा। यहाँ उसका कोई भी इलाज नहीं हो सकता। जितनी जल्दी ले जाओ उतना अच्छा है। ये सुनकर मेरे पति घबरा गये लेकिन बाबा ने मुझे बड़ी हिम्मत दी, मुझे बाबा पर पूरा-पूरा विश्वास था कि बच्चे को बाबा कुछ भी नहीं होने देंगे। मुझे भी आश्चर्य हो रहा था कि मुझ में इतनी हिम्मत कहाँ से आयी, नहीं तो किसी की छोटी-सी बीमारी से भी मैं घबराती थी लेकिन उस दिन मेरे बच्चे की जान को बहुत खतरा था तो भी मैं हिम्मत से खड़ी थी।

मैंने बच्चे से कहा, तू मास्टर सर्वशक्तिवान है, तुझे कुछ नहीं होगा, पूरे रास्ते मैं उसे यही याद दिलाती रही। डॉक्टर ने कहा कि उसकी गर्दन थोड़ी भी हिलनी नहीं चाहिए। एम्बुलेन्स में डालते समय उसकी गर्दन का दर्द बढ़ गया, वो चिल्लाने लगा। ब्रह्माकुमार डॉक्टर भाई ने बड़ी हिम्मत से बच्चे की गर्दन पर नेक बेल्ट लगायी ताकि गर्दन

हिले नहीं। फिर भी उसको रास्ते भर इतना दर्द होता रहा कि चिल्लाते-चिल्लाते इतनी ठंड में भी पसीना आ गया। हम रात के साढ़े बारह बजे नासिक के अपोलो हॉस्पिटल में पहुँचे। डॉक्टर भी हमारा इंतजार कर रहे थे।

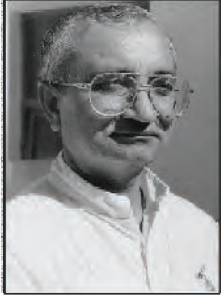
बच्चे को चेक करने के बाद सब रिपोर्ट्स निकाली गई। डॉक्टर ने ऑपरेशन का निर्णय लिया, 26 जनवरी को उसका ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के लिए जाने से पहले डॉक्टर ने भी कहा, मेरा प्रयत्न 95 प्रतिशत काम करेगा ही लेकिन 5 प्रतिशत तो भगवान के ही हाथ में है। मैं भगवान को प्रार्थना करने के बाद ही ऑपरेशन की शुरुआत करूँगा।

ऑपरेशन 4 घण्टे तक चला। लगता था कि बाबा भी डॉक्टर को ऑपरेशन में मदद कर रहे हैं और बच्चे के साथ रहकर उसको सर्वशक्तियों की किरणें दे रहे हैं। ऑपरेशन के तीसरे दिन डॉक्टर ने उसे खड़ा करके थोड़ा-सा चलाया। व्यायाम के बाद बच्चे के हाथ में धीरे-धीरे ताकत आ गयी। डॉक्टर को आश्चर्य हुआ और कहा, इस बच्चे को किसी दिव्यशक्ति ने ही बचाया है। यह सुनकर हमारे रोमांच खड़े हो गये। बच्चे का कुछ पुण्य होगा जो ये इतनी मार लगने के बाद भी सही सलामत है। उसे चलते-फिरते देखकर सबको आश्चर्य हुआ।

अब बच्चा 10वीं कक्षा में है। वो अपना सब काम खुद ही करता है। मालेगाँव के डॉक्टर ने भी कहा, तुम बहुत-बहुत लक्की हो, नहीं तो ये ऑपरेशन 2-3 बार करना पड़ता है। इस घटना को 20 जनवरी, 2017 को दो साल पूरे हुए। बाबा का जितना शुक्रिया करूँ उतना कम है। दिल यही कहता है –

जब साथी हों भगवान, तो क्यों हों हम परेशान,
उनकी याद में ही है जीवन की शान,
ऐसे बाबा को लाख-लाख प्रणाम।

जीवन परिवर्तन की अद्भुत क्षमता थी दीदी मनमोहिनी में



ब्रह्माकुमार श्याम (आर्टिस्ट), शान्तिवन

दिसम्बर, 1968 में, 13 वर्ष की आयु में, लौकिक पिताजी के साथ मुझे मुम्बई के सायन सेवाकेन्द्र से ईश्वरीय ज्ञान मिला। दादी बृजइन्द्रा ने पिताजी के साथ मुझे भी ईश्वरीय ज्ञान का कोर्स करवाया। मुम्बई में 18 दिन रहने के बाद हम नागपुर वापस आ गए और आते ही घर में गीता पाठशाला खुल गई। कई भाई-बहनें आने लगे। ज्योतिषियों ने मेरी जन्मपत्री देखकर बताया था कि यह पन्द्रह साल की आयु में संन्यासी बन जाएगा। जब पन्द्रह साल का हुआ तब सन् 1970 में पिताजी के साथ पहली बार मधुबन आना हुआ। मधुबन देखकर लगा कि मैंने पहले भी इसे देखा और अनुभव किया है। जब अव्यक्त बापदादा से मिलना हुआ तो बाबा ने कहा, “बच्चा अपने असली स्थान पर आ गया है।” बाबा ने बहुत सारा सूखा मेवा मेरे हाथों में भर दिया। सन् 1971 में जब दुबारा मधुबन आया तो यहीं का होकर रह गया और वर्तमान समय शान्तिवन के आर्ट विभाग में सेवारत हूँ।

रूहानियत का बल

पुरुषोत्तम संगमयुग के इस सुहावने समय में मुझ आत्मा का यह परम सौभाग्य है कि बापदादा की अति प्रिय रत्न बड़ी दीदी मनमोहिनी जी का मार्गदर्शन एवं उनके जीवन को नजदीक से अनुभव करने के कई मौके मिले। दीदी जी में आत्माओं को परखने की अद्भुत शक्ति थी जिससे वे उन्हें योग्यता अनुसार ईश्वरीय सेवा देती थी और आगे भी बढ़ाती थी। उनकी व्यवहारकुशल शैली ऐसी थी कि कैसी भी आत्मा सामने आए, वे उमंग-उत्साह भर कर उसे सेवा के योग्य बना देती थी। दीदी जी में रूहानियत का बल कूट-कूटकर भरा हुआ था। उनके सम्पर्क में आने वाली प्रत्येक आत्मा को यह रूहानी बल अवश्य प्रभावित करता

था। उनके द्वारा कही जाने वाली हर बात में अनुपम रूहानी कशिश होती थी जो कि जौहर का कार्य करती थी। इसी जौहर के होते आत्माओं को अपने मूल गुणों का एहसास हो जाता था और दीदी जी की बातें उनके लिए वरदान साबित होती थीं।

प्रतिज्ञा बनी वरदान

दूसरों के जीवन में परिवर्तन लाने की दीदी जी में अलौकिक क्षमता थी। किसी के कड़े संस्कारों का वे अपने वरदानी बोल व शिक्षाओं द्वारा परिवर्तन कर देती थी। दीदी जी की इस विलक्षण विशेषता का मैंने कई बार अनुभव भी किया और इसका लाभ उठाकर जीवन में परिवर्तन भी किया। एक बार मैंने दीदी जी को बताया कि दिये हुए कार्य को जब भी कोई ठीक रीति से पूर्ण नहीं करता तो मुझे क्रोध आ जाता है। यह सुनकर दीदी जी ने उसी क्षण मुझसे प्रतिज्ञा कराई कि “आज के बाद कभी भी, किसी भी परिस्थिति में क्रोध नहीं करना है।” यह प्रतिज्ञा आगे के सारे जीवन के लिये वरदान बन गयी। तत्पश्चात् अनेक विपरीत परिस्थितियों में मैंने अपने स्वभाव में स्वाभाविक परिवर्तन महसूस किया। प्रतिज्ञा पूर्ण करने का सूक्ष्म बल दीदी के माध्यम से इतना मिला जो कि मेरे अपने पुरुषार्थ से नहीं मिल सकता था। अहम् भाव के स्थान पर मुझमें स्वतः निमित्त भाव आने लगा। ज्ञान की कई गुह्य एवं मुश्किल धारणाओं को सहज, सरल एवं सुदृढ़ बनाने में दीदी जी का बेहद सहयोग मिलता रहा।

पढ़ाई पर ध्यान खिंचवाती थी

उन दिनों प्रातःकालीन क्लास में राजयोग का अभ्यास पौने छह बजे से सवा छह बजे तक होता था और मुरली 7.30 बजे तक पूरी हो जाती थी। दीदी पौने छह का रिकार्ड बजने के तुरन्त बाद क्लास में आ जाती थी। वे मेरा

ध्यान रखती थी कि समय पर योग में आता है या नहीं। मैं ठीक पौने छह बजे क्लास में पहुँच जाता था। दीदी मेरी डायरी पढ़ती थी, जिसमें मुरली लिखी होती थी। दीदी 10.30 बजे पत्रों के उत्तर देकर पूरे कर देती थी। मुझे कहती थी, मैं 10.30 बजे तुमको बुलाऊँगी और मुरली के प्रश्न पूछूँगी। ऐसा मौका 10-15 बार मिला जो दीदी ने मुरली के प्रश्न पूछे और मैंने उत्तर दिए। पढ़ाई पर ध्यान देखकर वे खुश हो जाती थी। गुजराती में जो पत्र आते थे, दीदी मुझे पढ़ने के लिए देती थी। मैं उन्हें पढ़कर सुनाता था, फिर वो हिन्दी में उत्तर देती थी।

स्वयं कर्म करके दिखाती थी

दीदी कोई भी कार्य करती थी तो किसी को कहती नहीं थी, खुद करके दिखाती थी। जब ओमशान्ति भवन बन रहा था तब ब्लास्टिंग होती थी और पत्थर के टुकड़े इधर-उधर बिखरते थे। दादी-दीदी दोनों खुद हाथों से पत्थर उठाकर एक तरफ करती थीं, इससे जगह साफ हो जाती थी। अगले दिन फिर ब्लास्टिंग होती थी। दीदी, दादी को पत्थर उठाते देख अन्य टीचर बहनें तथा पार्टियों के भाई भी इस सेवा में लग जाते थे। दीदी कहती थी, इस ओमशान्ति भवन में बाबा के बच्चों का ही हाथ लगेगा। दीदी को यह स्लोगन पक्का था, “जैसे कर्म मैं करूँगी, मुझे देखकर और करेंगे।”

बढ़ा देती थी उमंग-उत्साह

मुरली में जब भी पेंटिंग, कला, डिजाइन से सम्बन्धित कोई पॉइन्ट आती थी तो मैं अन्डरलाइन करके रखता था। कई बार बाबा कहते थे, बच्चों की बुद्धि चलनी चाहिए कि हम कैसे अच्छे-अच्छे चित्र बनायें। बाबा यह भी कहते थे, स्वर्ग के अच्छे चित्र बनने चाहिए। मैं उसी समय क्लास में ही रफ स्कैच बना लेता था। इस प्रकार डायरी में स्कैच बने हुए रहते थे। कई बार मेरे स्नेही भ्रातागण उस डायरी को बड़ी दीदी जी तक पहुँचा देते थे कि इन्होंने मुरली के डायरेक्शन अनुसार यह चित्र बनाया है। फिर दीदी जी क्लास में मुझे खड़ा करती थी और सभी को डायरी

दिखाती थी, इस प्रकार मेरा उमंग-उत्साह बढ़ा देती थी। उस समय यज्ञ में लगभग 40 भाई-बहनें होते थे जिनमें मैं सबसे छोटा होने के कारण सभी का प्यार-दुलार भी बहुत रहता था।

बाबा से मिला वरदान

ड्राइंग शीट पर पेंट से लिखे स्लोगन लेकर मैं दीदी के पास जाता था। दीदी, दादी को कहती थी कि यह बच्चा बहुत होशियार है। एक बार एक बड़ी ड्राइंग शीट पर ऐसा चित्र बनाया था जिसमें शान्ति स्तम्भ के अन्दर से सूक्ष्म ब्रह्माबाबा इमर्ज होते दिख रहे थे। वह मैंने दादी को दिखाया, तो दादी ने कहा, आज बाबा आने वाले हैं, उनको दिखाऊँगी। शाम को जब अव्यक्त बापदादा की पधरामणि हुई तब दादी ने बाबा को दिखाया। बाबा ने कहा, “पेंटिंग बहुत अच्छी है, इसने बाबा को ही बना दिया है।” तब दादी ने कहा, बाबा, यह पेंटिंग का काम भी थोड़ा-थोड़ा जानता है। यह सुनकर बाबा ने वरदान दिया कि “आगे चलकर यह बहुत बड़ा आर्टिस्ट बनेगा।” इस प्रकार बाबा से मुझे वरदान मिल गया। इसके बाद मम्मा, बाबा, स्वर्ग, सीढ़ी, गोला तथा अनेक प्रकार के पोस्टर कैनवास पर बनाए जो आज भी मधुबन के मैडिटेशन हाल में लगे हैं।

तीन बार प्रतिज्ञा

एक बार ओमशान्ति भवन के पीछे बने आर्ट विभाग में हम चित्र बना रहे थे। पंजाब की दो बहनें आईं। उन्होंने कहा, ऐसे चित्र हमें चाहिए। मैंने कहा, हम तो मधुबन के लिए बनाते हैं, सेवाकेन्द्रों के लिए नहीं। अगले दिन दादी ने मुझे बुलाया, पूछा, श्याम आपसे कोई गलती हुई है? मैंने कहा, नहीं। दादी बोली, और सोचो। मैंने कहा, हाँ, दादी, कल बहनें आई थीं, मैंने उन्हें कहा था, हम सेवाकेन्द्रों के लिए चित्र नहीं बनाते हैं। तब दादी ने कहा, यह प्रतिज्ञा करो, “आज के बाद बाबा के चित्रों के लिए किसी को भी मना नहीं करूँगा।” दादी ने कहा, “तीन बार प्रतिज्ञा करो, बाबा के चित्र के लिए किसी को मना नहीं करूँगा, बनाकर दूँगा।” तब से आज तक किसी को मना नहीं किया है।

एक बार इन्द्र शर्मा (सुप्रसिद्ध आर्टिस्ट) मधुबन आए थे। उनको ओमशान्ति भवन के चित्र बनाने का ठेका दिया गया था। ये चित्र वे म्यूजियम के ऊपर के हॉल में बना रहे थे। मैं बीच-बीच में जाकर देखता था और सीखता था कि कैसे बना रहे हैं। इन्द्र शर्मा जी अपने साथियों को डायरेक्शन देते थे, तो मैं ध्यान से सुन लेता था। चित्र बनाने में रंगों को हल्का, गहरा करना, ये सब भी मैं देखता था। फिर मैंने एक चित्र बनाया जिसे इन्द्र शर्मा जी ने देखा और जाकर दादी को बताया की इसकी पेन्टिंग बहुत अच्छी है, इसके पास आर्ट की गहरी नॉलेज है। हमारे पास जो लोग पाँच साल से काम कर रहे हैं उनमें भी ऐसी हाथ की सफाई नहीं है। उसने मांग की कि इसे दो साल के लिए मेरे पास भेज दो। दादी ने मना करते हुए कहा कि यहाँ बहुत सेवा है। इन्द्र शर्मा जी सात साल बाद पुनः मधुबन आए और मुझे प्यार से गले लगाकर कहा, मैंने जैसा सोचा था, आप कला में उससे भी आगे निकल गए। मैडिटेशन हाल के चित्र देखकर वे बहुत खुश हुए और बोले, अब आपको किसी के मार्गदर्शन की जरूरत नहीं, आप स्वयं ही सब कुछ कर सकते हो।

‘ना’ करना माना भाग्य को ठुकराना

दीदी जी ने मुझे सिखाया कि इस बेहद यज्ञ में कोई भी सेवा मिले, उसे कभी ‘ना’ कहकर ठुकराना नहीं बल्कि मिली हुई सेवा को मुसकराकर स्वीकार करते हुए ‘हाँ जी’ का पाठ पक्का रखना। वे कहती थी कि ‘ना’ करना माना आये हुए भाग्य को ठुकराना। मैंने दीदी जी से कहा, जी दीदी जी; यह बात पक्की याद रहेगी। इस धारणा ने मुझे हुजूर बापदादा की हजार गुणा मदद का पात्र बना दिया।

मुझ आत्मा को हमेशा यह फखुर रहता है कि सतयुग-त्रेतायुग में सबसे ज्यादा पढ़ाया जाने वाला विषय ‘आर्ट’ – बापदादा ने, दादी-दीदी जी ने संगमयुग के सुहावने समय में जिम्मेवारी के रूप में मुझे दिया है। ❖

निंदा करना भी रोमिंग

चार्ज की तरह ही है

ब्रह्माकुमार मधुकर, पवनी (महाराष्ट्र)

हम सभी जानते हैं कि एक राज्य (State) से दूसरे राज्य में जब हम अपने परिचितों को फोन करते हैं तो फोन करने वाले और फोन सुनने वाले – दोनों को धन के रूप में रोमिंग चार्ज लगता है। इसी प्रकार, किसी की निंदा करने वाले और निंदा सुनने वाले, दोनों पर पाप कर्म के फल के रूप में चार्ज लगता है।

परमपिता परमात्मा शिवबाबा ने हम बच्चों को अनमोल शिक्षा दी है – मीठे बच्चे, परचिंतन पतन की जड़ है। स्वचिंतन उन्नति की सीढ़ी है। अपनी घोट तो नशा चढ़े। सदा आत्मिक स्थिति में रहने का अभ्यास करो।

जब भी किसी की निंदा करने का संकल्प आये तो परम प्यारे शिवबाबा द्वारा दिए गए स्वमान “मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ” का अभ्यास करें। इससे आत्मा में शिवबाबा की शक्तियों की किरणें भर जाएंगी और आत्मा में समाने की शक्ति आने से निंदा करने का संकल्प मर्ज हो जायेगा। एक माँ अपने बच्चे की सभी गलतियाँ सहन भी कर लेती है और समा भी लेती है जबकि वह किसी स्वमान का अभ्यास भी नहीं करती। इसकी भेंट में, शिवबाबा ने हम बच्चों को ढेर सारे स्वमान दिये हैं जिनसे आत्मिक स्थिति और शिवबाबा की याद बनी रहती है। बाबा कहते हैं, मीठे बच्चे, स्वमान में रहना भी योग है। हम किसी की निंदा करते हैं माना हमारे अंदर समाने की शक्ति नहीं है अर्थात् स्वमान के अभ्यास की कमी है। “मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ” इस अभ्यास से निंदा अर्थात् आध्यात्मिक रोमिंग चार्ज से बच सकते हैं। फायदा ही फायदा है। ❖

त्याग व सेवा की मूरत माता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

माता अर्थात् निराकार आत्मा को साकार देह प्रदान कर उसे साकार लोक में लाने के निमित्त जननी। माता शब्द का भाव मात्र दैहिक नारी तक सीमित नहीं। जो भी माता जैसे गुण दिखाए, उसे माता माना जाने लगता है जैसेकि धरती-माता, गौ-माता, भारत-माता, लक्ष्मी-माता, काली-माता, गंगा-माता आदि। सन्तान पर माँ के रक्त, आंसू, दूध व पसीना – इन चार द्रव्यों का ऐसा अनुग्रह (दया, कृपा) होता है जिसे चुक्ता करना आसान नहीं।

माता प्रथम देवता

दुनिया में लेन-देन का हिसाब-किताब रखा जाता है परन्तु माता से सब कुछ बेहिसाब मिलता है। माँ अपने दिये दूध का, गोद में पालने का, सन्तान के प्रति किये गये त्याग व सेवा का कभी हिसाब नहीं रखती है और न सन्तान अपनी माँ से मिली इन अनमोल प्राप्तियों का हिसाब बराबर करने की सोचता है। अगर सोचे भी, तो भी हिसाब चुक्ता किया नहीं जा सकता। अतः हर मनुष्य के लिए उसकी माता प्रथम पूजनीय-वंदनीय देवी है। स्वामी दयानन्द के अनुसार, पूजा के योग्य सबसे प्रथम देवता माता है। पुत्रों को चाहिए कि माता की टहल-सेवा तन-मन-धन से करें। उसे सब तरह से प्रसन्न करें। उसका अपमान कभी न करें।

माता देखती है केवल गुण

पुनर्जन्म में आई जीवात्मा को, 2-3 साल तक पिछले जन्म की घटनाएं, मृत्यु-पीड़ा व परिजनों से बिछोह की स्मृतियाँ दुख देती रहती हैं परन्तु माँ से मिल रहा प्रेम उसका सहारा बनता है। बच्चे में पूर्वजन्म के गलत संस्कार प्रत्यक्ष होने पर भी माँ उससे नफरत न करके प्यार से संभालती-संवारती है और यथासंभव सुधार करती है। किसी विकारी व्यक्ति के प्रति दूसरे जब नफरत का भाव रखते हैं तो उसके विकार और भी प्रबल होते जाते हैं परन्तु माँ



अपनी विकारी सन्तान के अवगुण न देख कर केवल गुण देखती है, जिससे उसके संस्कार सुधरते जाते हैं। एक प्रकार से माँ की पालना पाता हुआ शिशु 2-3 साल तक पूर्वजन्म के संस्कारों के शोधन की प्रक्रिया से गुजरता है।

दो फरिश्ते

एक कहानी है कि ईश्वर जब अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्यात्मा को पृथ्वी पर जीवन जीने के लिए भेजने लगा तो उसने घबरा कर अपने परमपिता से पूछा कि इतने बड़े संसार में पहुँच कर मैं आपके बिना अपनी जरूरतों को कैसे पूरा करूँगी और कौन मेरी रक्षा करेगा? ईश्वर ने मुस्करा कर कहा, घबराओ नहीं, वहाँ दो फरिश्ते तुम्हारी देखभाल व रक्षा करेंगे। मनुष्यात्मा ने कहा कि उन्हें मैं कहाँ ढूँँगी और कैसे पहचानूँगी? ईश्वर ने कहा, चिन्ता मत करो, वे स्वयं ही तुम्हारी सेवा में उपस्थित हो जायेंगे और उनमें से एक तुम्हारी माँ कहलायेगी और दूसरा तुम्हारा पिता। यह सर्वविदित है कि कैसे माँ अपने बच्चे की पालना व रक्षा करती है परन्तु सन्तान व माँ का श्रेष्ठ संबंध आज अपनी महत्ता व मौलिकता खोता जा रहा है। इससे फिर बच्चे के अंदर जिन वांछित गुणों व संस्कारों की धारणा होनी चाहिए, वे तेजी से लुप्त होते जा रहे हैं।

आत्मबल के लिए व्रत

यहूदी कहावत है कि ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं हो

सकता था इसलिए उसने माताएं बनाईं। माताएं किसी भी धर्म-सम्प्रदाय की क्यों न हों, वे सन्तान को अच्छे संस्कार देने की ही कोशिश करती हैं। अमेरिका के राष्ट्रपति रहे अब्राहम लिंकन का यह कथन था कि मैं आज जो भी हूँ और भविष्य में जो भी बन सकता हूँ, उसके लिए मैं अपनी फरिश्ते जैसी माँ का आभारी हूँ। अब ये फरिश्ते, ब्रह्माकुमारियों के रूप में अलौकिक बच्चों की पालना के निमित्त बने हुए हैं ताकि ऐसे बच्चे भविष्य में देवी-देवताओं के रूप में इस धरा पर प्रकट हो सकें। खून के संबंध पर आधारित लौकिक माँ की पालना में स्वार्थ की बू आ सकती है परन्तु ब्रह्माकुमारियों द्वारा बिना किसी लौकिक संबंध के अनजान मनुष्यों को दी जा रही निःस्वार्थ प्रेम भरी पालना तो अलौकिक खुशबू ही फैलाती है। लौकिक माता भोजन का उपवास रखती है केवल अपने परिवार के कल्याण के लिए परन्तु ब्रह्माकुमारी माताएँ व बहनें आजीवन शुद्ध भोजन लेने का व परमपिता शिव के सान्निध्य में रहने का व्रत करती हैं आत्मबल पैदा कर उसे विश्वपरिवार के कल्याण में लगाने हेतु।

वात्सल्य है सुरक्षा आवरण

माँ के आंचल में सोने से जैसा सुख मिलता है, वैसा सुख संसार में कहीं और नहीं। परन्तु आज की पीढ़ियाँ इस सुख से वंचित हो रही हैं। माँ की गोद का स्थान आज या तो पालने (Cradle) ने ले लिया है या काम वाली बाई की गोद ने। माँ की गोद का तापमान व आर्द्रता (Humidity), शिशुओं के अनुकूल होते हैं। जो वात्सल्य भरे प्रकंपन शिशु को माँ से मिलते हैं, वे काम वाली बाई या किराये की कोख वाली माँ (Surrogate Mother) से नहीं मिलते हैं। संसार में दुआ, आशीर्वाद, शुभभावना आदि की लेन-देन से स्वास्थ्य अच्छा रहता है और संबंधों में सुदृढ़ता आती है परन्तु अपनी सन्तान के प्रति माँ का जो वात्सल्य होता है, वह तो एक सुरक्षा आवरण बन कर उसकी रक्षा करता रहता है। सन्तान लायक हो या नालायक, माँ तो हमेशा उसका कल्याण ही

चाहती है।

माता-क्षमा से भरपूर

माता में क्षमाशीलता व मधुरता का विशेष गुण होता है। यादगार कथा है कि महाभारत युद्ध में द्रोणाचार्य के मारे जाने के बाद उसका पुत्र अश्वत्थामा अपने पिता के वध से क्षुब्ध था। एक रात वह चोरी से पाण्डवों के शिविर में घुस गया और द्रौपदी के सो रहे पांच पुत्रों को उसने मार डाला। इससे पाण्डवों में हाहाकार मच गया और द्रौपदी तो मानो विक्षिप्त ही हो गई। अगले दिन के युद्ध में अर्जुन ने अश्वत्थामा को पकड़ लिया और उसे द्रौपदी के सामने पटक कर कहा कि तुम इसे जो सजा देना चाहो दे दो। द्रौपदी ने अपने पुत्रों के कातिल को तमक कर देखा परन्तु अगले ही क्षण उसमें क्रोध के बजाय करुणा का भाव जाग गया। द्रौपदी ने सोचा कि यदि इसे प्राणदण्ड दे दिया तो इसकी माता भी मेरी तरह ही शोक के सागर में डूब जायेगी। द्रौपदी ने अर्जुन से कहा कि यह गुरुपुत्र है, इसे छोड़ दो। मैं नहीं चाहती कि गुरु-पत्नी भी उसी व्यथा से गुजरे, जिससे मैं गुजर रही हूँ। मैं उस माता की ममता को समझ सकती हूँ, अतः इसे क्षमा करती हूँ। आप भी इसे क्षमा कर दो। अश्वत्थामा को छोड़ दिया गया और वह लज्जा व पश्चाताप के साथ चला गया। माता ईश्वर का प्रतिनिधित्व करती है और क्षमा से भरपूर होती है।

अवकाशहीन वर्ग

माँ धुरी बन कर परिवार का भार अपने कंधे पर उठाती है। गृहस्वामी या पति एक दिन बीमार पड़ जाए तो किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता परन्तु पत्नी या माँ बीमार पड़ जाए तो पारिवारिक कारोबार थम-सा जाता है। माँ को इस बात का पता होता है और वह बीमार पड़ना नहीं चाहती। उसकी इस इच्छा-शक्ति के कारण उसका शरीर आधि-व्याधि में भी साथ देता रहता है। माँ और गृहिणी वो कर्मचारी हैं जिनके कार्य समाप्त करने की कोई समय सीमा नहीं है। माताओं का सबसे बड़ा अवकाशहीन वर्ग है। यदि माँ कुछ दिनों के लिए कहीं यात्रा पर चली जाए तो घर, वही घर नहीं रह

जाता। रसोईघर बेजान व बेतरतीब नजर आता है, ड्राइंगरूम के पर्दे, फर्नीचर व कालीन सोए-सोए से दिखते हैं। पूरे घर का वातावरण थका-हारा सा दिख पड़ता है। घर के सदस्य भी ढीले-ढाले और खोए-खोए से नजर आते हैं। कारण है माँ की सतत त्यागमई सेवा व कल्याणकारी प्रकंपनों का अभाव।

संकटमोचन माँ

माँ वह बैंक है जहाँ आप अपनी चिन्ता व दुख जमा करके उस पर खुशियों व बेफिक्री का ब्याज कमा सकते हैं। माँ वह अस्पताल है जहाँ आप बिना खर्च के नर्स, दवाईयाँ, शारीरिक उपचार व रोग-अनुकूल भोजन प्राप्त करते हैं। माँ वह सहेली है जो आपकी व्यक्तिगत बातों को गुप्त रखते हुए आपको श्रेष्ठ सलाह देती है। माँ वह वकील है जो आपकी गलतियों को समझ कर आपके पिता या विरोधी से आपकी सिफारिश करके मामले को समाप्त कराती है। माँ वह बीमा-कम्पनी है जो आपके भविष्य की सुरक्षा का गुप्त बीमा करती है, चाहे भविष्य में आप पर आये संकट को उसे अपने ऊपर लेना पड़े। माँ वह पुजारिन है जो ईश्वर की आराधना करते हुए आपके सुख, संपन्नता व स्वास्थ्य की कामना करती है। अकसर असंभव काम के लिए कह दिया जाता है कि इसे तो स्वयं फरिश्ते भी नहीं कर सकते परन्तु वे भूल जाते हैं कि माँ एक ऐसा फरिश्ता है, जो सन्तान के लिए कुछ भी कर सकती है। जब विपत्तियाँ आती हैं, मन तनावग्रस्त होता है, तब माँ सर्वश्रेष्ठ मित्र साबित होती है। जब बुरे समय पर निकटस्थ मित्र किनारा कर लेते हैं, अपने सगे भी मुँह फेरने लगते हैं, संकट के काले बादल हिम्मत तोड़ देते हैं, तब माँ ईश्वर का रूप हो जाती है। वह अपनी इच्छा-शक्ति व शुभभावना से संकटमोचक बन कर पार निकाल ले जाती है। मंदिर में संकटमोचक (हनुमान) के सामने हाथ जोड़ने से उतनी मदद नहीं मिलती जितनी कि बिना हाथ जोड़े, बिना मांगे घर में माँ से कदम-कदम पर मदद मिलती है। परन्तु मुफ्त में मिल रही इस मदद के लिए माँ का कभी धन्यवाद नहीं

किया जाता।

स्नेह व शुभभावना का हाथ

माता का एक अन्य रूप भी है। जब सन्तान भटकने-बहकने लगे तब उसे सुधारने के लिए माँ की ममतामई आँखें भी तीखी व लाल हो जाती हैं। एक कुम्हार की तरह वह सन्तान रूपी कच्चे घड़े पर ऊपर से वार करती है तो अंदर से शुभभावना व स्नेह का हाथ लगा कर उसे टूटने से भी बचाती है। कल्याणार्थ, क्रोध का नियंत्रित व कृत्रिम इस्तेमाल यदि कोई कर सकता है तो वह है माँ। सन्तान की कमजोरी पर माँ को यदि फिक्र होता है, तो उसकी कामयाबी पर माँ को फखर भी होता है। सन्तान के प्रति वह यदि चिन्तित रहती है, तो उसके सुनहरे भविष्य के प्रति वह चिन्तन भी करती है। माँ का जीवन तो मानो सन्तान की जीवन रूपी नाव की पतवार है परन्तु पार लगते ही सन्तान पतवार को पीछे छोड़ देती है। माँ, पुत्र को बुढ़ापे की बैसाखी समझे या न समझे परन्तु पुत्र की कामयाबी माँ की बैसाखी के सहारे ही होती है।

क्रमशः

2017-18 सत्र के लिए प्रवेश आरंभ

एस.एल.एम.ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग तलहटी-आबू रोड, शिवमणि होम के पास, जिला-सिरोही राजस्थान में बी.एस.सी.नर्सिंग (4 वर्षिय) डिग्री कोर्स एवं जी.एन.एम.(3 वर्षिय) डिप्लोमा कोर्स में 2017-18 सत्र के लिए प्रवेश आरंभ।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें -

डिग्री कोर्स के लिए -

मो.न.9529047341, 8432345230

डिप्लोमा कोर्स के लिए -

मो.न.8058822864, 8432345230

मानसिक तनाव से मिली मुक्ति

ब्रह्माकुमार डॉ.बी.आर.गुप्ता, लखनऊ

कानपुर कृषि विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के रूप में शिक्षण, शोध एवं प्रसार कार्य से सन् 2008 में निवृत्त होने के पश्चात् मैं लौकिक निवास, लखनऊ में लौकिक पुत्रों के साथ रहने लगा। मेरी युगल का लम्बी बीमारी के बाद सन् 2010 में निधन हो गया। सन् 2013 में कुछ ऐसी परिवारिक परिस्थितियाँ बन गई कि न तो उनका समाधान कर पाया और न समझौता। परिणामस्वरूप मानसिक तनाव का शिकार हो गया। जीवन में चिंता, भय, शंका, नकारात्मकता, अनिद्रा, उदासीनता छा गई। सामाजिक जीवन भी अस्त-व्यस्त-सा हो गया।

अन्ततः नवम्बर, 2013 में मनोचिकित्सक के पास जाना पड़ा। उन्होंने नींद के लिए गोलियाँ लेने का सुझाव दिया। लगभग एक साल तक इलाज चला। अस्थायी रूप से कुछ लाभ मिला परन्तु कभी-कभी परिस्थितिजन्य तनाव हो ही जाता था। परमपिता शिव बाबा की कृपा से अक्टूबर, 2015 में एक पर्चा पढ़ने को मिला जिससे ज्ञात हुआ कि लखनऊ में 20 अक्टूबर से 31 अक्टूबर, 2015 तक प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा 'अलविदा तनाव शिविर' का आयोजन हो रहा है। मुझे एक आन्तरिक सुख का अनुभव हुआ।

मैं अपने लौकिक पुत्र तथा बहू के साथ शिविर में जाने लगा। कार्यक्रम प्रातः 6.30 से 8.00 बजे तक चलता था। पहले दिन ही मुझे सकारात्मक भाव का अनुभव हुआ। बीते कल (Yesterday) तथा आने वाले कल (Tomorrow) को भुलाते हुए आज (Today) को जीयें और खुश रहें, ऐसा बताया गया। इसके साथ ही आडियो कैसेट पर एक संगीत सुनवाया गया –

सोचना क्या, होगा जो भी होना।
कल के लिये आज को क्या खोना।

इस गीत का मेरे मानस-पटल पर गहरा प्रभाव पड़ा तथा मेरी सोच नकारात्मक से सकारात्मक होने लगी। इसके साथ ही निमित्त बहन कुछ स्वमान (Spiritual Injections) रोज बताती थी जैसे – मैं भगवान का बच्चा हूँ, प्रभु के वरदानों का हाथ मेरे सिर पर है, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है, प्रभु के सर्व खजानों (खुशी, प्यार, शक्ति, आनंद) का मैं वारिस हूँ, मुझ जैसा भाग्यवान इस सृष्टि पर कोई और नहीं। वाह! मेरा मिलन भगवान से हो गया, मैं इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर एक महान कलाकार हूँ इत्यादि। इन स्वमानों को प्रतिदिन कम से कम पचास बार लिखने के लिये कहती थी। उनका नारा था 'कलम चलाओ, तनाव भगाओ।' शिविर में राजयोग का अभ्यास कराया जाता, उसे मैं घर पर भी करने लगा। कुछ साहित्य भी प्राप्त हुआ। उसे भी पढ़ता था। प्रयत्न करता था कि मन को व्यस्त रखा जाये ताकि व्यर्थ संकल्प न आवें। शिविर में आध्यात्मिकता का पहला पाठ पढ़ाया गया कि 'मैं एक चैतन्य अविनाशी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा हूँ तथा भृकुटि के मध्य अवस्थित हूँ।'

शिविर के अन्त तक मानसिक तनाव में काफी आराम मिल चुका था। तत्पश्चात् स्थानीय ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर पन्द्रह दिनों के Advance course में सम्मिलित हुआ। ज्ञान मार्ग पर ऐसा रुझान हुआ कि मैं प्रतिदिन केन्द्र पर जाने लगा। राजयोग का अभ्यास करने लगा तथा बाबा की मुरली सुनने लगा।

अब तनाव से मुक्ति पा चुका हूँ, दवाइयाँ बंद हो गई हैं। तन तथा मन को स्वस्थ रखने के लिये तीन बातें – शुद्ध, शाकाहारी, सन्तुलित भोजन, व्यायाम तथा आध्यात्मिकता का सेवन आवश्यक है। इसको दृष्टिगत रखकर सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए शिव बाबा की याद की यात्रा में अग्रसर होने में प्रयासरत हूँ। ❖



ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▶▶ E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125



1. बनारस (श्रीराम कालोनी)- उ.प्र. के मुख्यमंत्री भ्राता योगी आदित्यनाथ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. सरोज बहन। 2. शान्तिवन (आबू रोड)- ग्रामविकास प्रभाग द्वारा आयोजित वृक्षारोपण एवं वृक्षपालन अभियान के शुभारम्भ कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए जिला प्रमुख पायल परसराम पुरिया। मंचासीन हैं दांतीवाड़ा प्रोजेक्ट के डी.एफ.ओ. भ्राता अनिहोत्री, ब्र. कु. राजू भाई, ब्र. कु. मोहन सिंघल, ब्र. कु. भरत भाई तथा अन्य। 3. देहरादून- 'सम्बन्धों में मधुरता' विषयक कार्यक्रम में मंचासीन हैं ब्र. कु. शिवानी बहन, ब्र. कु. मन्जू बहन, पूर्व खेल मंत्री भ्राता दिनेश अग्रवाल तथा उत्तराखण्ड के संसदीय मामलों के मंत्री भ्राता प्रकाश पन्त। 4. जौनपुर- उ.प्र. के स्टैम तथा नागरिक उद्यम मंत्री भ्राता नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. मन्जू बहन। 5. कुरुक्षेत्र (विश्वशान्तिधाम)- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के उप-कुलपति डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. सरोज बहन। साथ में ब्र. कु. आर. डी. शर्मा। 6. दिल्ली (हरिनगर)- ज्ञान-चर्चा के बाद ब्र. कु. शुक्ला बहन, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के उपकुलपति प्रो. डॉ. जगदीश कुमार, उपकुलपति प्रो. डॉ. चिंतामणि महपात्र, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के उपकुलपति प्रो. डॉ. पी. एन. शास्त्री तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। 7. कोटद्वार-पौड़ी (गढ़वाल)- उत्तराखण्ड के उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धनसिंह रावत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. ज्योति बहन। 8. मुम्बई- ब्र. कु. चांद मिश्रा को 'दादासाहेब फालके एकाॅडमी अवार्ड' से सम्मानित करते हुए फिल्म अभिनेत्री बहन रविना टंडन। 9. लखनऊ (आलम बाग)- उत्तर प्रदेश की बाढ़ नियंत्रण, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार, महिला, परिवार एवं शिशु कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बहन स्वाति सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र. कु. दिव्या बहन।



ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-

मीडिया प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, ब्रॉडकास्ट एडिटर एसोसिएशन के महासचिव भ्राता एन.के.सिंह, न्यू वर्ल्ड इंडिया के प्रबंध निदेशक भ्राता अनिल राय, ब्र.कु. शीलू बहन, ब्र.कु. आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.करुणा भाई, भ्राता कमल दीक्षित तथा अन्य।

रायपुर-

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भ्राता अमित शाह को माउण्ट आबू पधारने का निमंत्रण देते हुए ब्र.कु.कमला बहन तथा ब्र.कु.सविता बहन।



ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-

समाज सेवा प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजस्थान सरकार के पी.ए.ई.डी. राज्यमंत्री भ्राता सुशील कटारा, समाजसेवी सानुभाई कार्की, अनुसूचित जाति आयोग राजस्थान के उपाध्यक्ष भ्राता विकास खोलिया, ब्र.क.संतोष बहन, ब्र.कु.अमीरचंद भाई, ब्र.कु.प्रेम भाई तथा अन्य।

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत)-

वैज्ञानिक और अभियंता प्रभाग द्वारा अयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए हरियाणा विधान सभा के अध्यक्ष भ्राता कंवर पाल जी, भारी जल बोर्ड, एटॉमिक ऊर्जा विभाग, मुंबई के अध्यक्ष भ्राता ए.एन.वर्मा, मारुती उद्योग के महाप्रबंधक भ्राता रजत हांडा, ब्र.कु.गोदावरी बहन, ब्र.कु.मोहन सिंघल, ब्र.कु.भारत भाई, ब्र.कु.भारत भूषण तथा अन्य।

